बीओआई
वार्ता
बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृहपत्रिका

जून, 2025

यात्रा विशेषांक

बैंक ऑफ़ इंडिया

बीओआई वार्ता के मार्च 2025 अंक का विमोचन

दिनांक 16.05.2025 को प्रधान कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में बीओआई वार्ता के मार्च 2025 अंक का विमोचन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक द्वारा किया गया। इस दौरान कार्यपालक निदेशकगण, मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण उपस्थित रहे।

राजभाषा कार्यान्वयन हेतु बैंक ऑफ़ इंडिया को पुरस्कार

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान "ख" क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु बैंक ऑफ़ इंडिया को "द्वितीय पुरस्कार" प्रदान किया गया।

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री राजीव मिश्रा

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री बिश्वजित मिश्र

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजीव कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री अनूप पी., अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, सी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

मनमोहक मेघालय 08

पीढ़ियों का सफर, अतीत से भविष्य तक 10

स्मृति विशेष : पुरी की रथ यात्रा 13

लघु एवं कुटीर उद्यमों की 'लोकल से ग्लोबल' तक की यात्रा 14

भारत का भ्रमण, 'औपनिवेशिक संध्या से अमृतकाल की भोर तक' 16

तारा देवी हाइक 19

मसानज़ोर : वादियों में विदाई कार्यक्रम की अविस्मरणीय यात्रा 20

राजभाषा सम्मेलन सह समीक्षा बैठक 22

मुन्नार : ईश्वरीय अनुभूति 24

स्वतंत्रता के संघर्ष में कलम का सफर 26

सिक्किम : प्राकृतिक सौंदर्य, आध्यात्मिकता और रोमांच से भरी यात्रा 28

'भीमाशंकर', कुदरत का करिश्माई सफर 31

द्वारका और सोमनाथ : आस्था का अनुपम सफर 32

चिंकी की छलांग 34

पुस्तक समीक्षा - "यात्रा के पन्ने" - राहुल सांकृत्यायन 35

संगीत 36

यात्रा वृत्तांत - रामेश्वरम : जहाँ विश्वास जीवित है 37

चित्र काव्य प्रतियोगिता 38

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका बीओआई वार्ता का जून 2025 अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं आप सभी को यह भी अवगत कराना चाहता हूँ कि बैंक राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति कृत संकल्प है। हम बैंक में भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हैं। पिछले वित्तीय वर्ष के लिए बैंक को राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से राजभाषा कीर्ति (तृतीय पुरस्कार) प्राप्त हुआ था।

भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा इस वर्ष 26 जून 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली एवं 11 जुलाई 2025 को हैदाराबाद में अपना स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया गया है। इस समारोह में भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों एवं उनके अंतर्गत आने वाले कार्यालयों, स्वायत निकायों, सांविधिक निकायों, उपक्रमों, बैंकों, बीमा कंपनियों इत्यादि के राजभाषा अधिकारियों आदि द्वारा सहभागिता की गई। हमारे बैंक द्वारा भी इसमें सहभागिता की गई।

हमारा देश बहुभाषी देश है। विभिन्न शोध यह बताते हैं कि भाषा कारोबार को बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाती है। बैंक के डिजिटल उत्पाद हिंदी सहित 12 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में भी हम अपने उत्पाद एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाने की दिशा में प्रयासरत हैं। हमारे सभी स्टाफ सदस्य हिंदी एवं स्थानीय भाषाओं के महत्व को समझते हुए, ग्राहकों को उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करा रहे हैं।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी स्टाफ सदस्यों से अनुरोध करता हूँ कि वे हिंदी पत्रिका बीओआई वार्ता में अपने अधिक से अधिक मौलिक आलेख एवं रचनाएं प्रेषित करें। इसके साथ ही, मैं इस अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ।

इस अंक के माध्यम से मैं अपने बैंक के आसन्न 120वें स्थापना दिवस हेतु शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूँ कि हम सब मिलकर बैंक को सुदृढ़ तथा सशक्त बनाने की दिशा में कदम बढ़ाएंगे।

भवदीय,

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

“बीओआई वार्ता” के जून 2025 अंक के माध्यम से आपके साथ विचार साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। मौजूदा वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही हमारे लिए कई मायनों में ख़ास रही है। इस दौरान गत वर्ष के लेखापरीक्षित वित्तीय परिणाम घोषित किए गए। परिणाम के आंकड़ों ने सभी मापदंडों पर बैंक के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन को प्रमाणित किया है। चूंकि “बीओआई वार्ता” का यह अंक यात्राओं पर केंद्रित है तो यह कहना उचित होगा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान हमारे बैंक की व्यावसायिक यात्रा उपलब्धियों से भरी हुई थी। यह यात्रा हमें आगामी वर्षों में और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगी।

31 मार्च 2025 को वित्तीय वर्ष की समाप्ति के बाद त्योहारों से भरपूर अप्रैल माह का आगमन हमें आनंद और आराम का एहसास कराता है। जून तिमाही में हम सभी ने परंपरानुसार राम नवमी, महावीर जयंती, बाबा साहब डॉ. बी.आर. अंबेडकर जी की जयंती, बुद्ध पुर्णिमा और ईद-उल-ज़ुहा जैसे पावन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाया है। 26 जून को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में भी हमारे बैंक ने बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

जिस प्रकार ‘राजभाषा हिन्दी’ हमें भाषायी भिन्नता के बावजूद एकसूत्र में बांधने का कार्य करती है वैसे ही यात्राएं हमें भिन्न-भिन्न स्थानों, परंपराओं और संस्कृतियों से रूबरू कराती हैं। त्योहारों, स्थानान्तरणों और ग्रीष्मकालीन अवकाश के कारण जून तिमाही टूर-ट्रेवल की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है, इसलिए ‘बीओआई वार्ता’ के जून 2025 अंक को यात्रा विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाना समीचीन है। यात्रा अनुभवों सहित स्टाफ सदस्यों के विविध भावों को अभिव्यक्ति देने में ‘बीओआई वार्ता’ की भूमिका अप्रतिम है।

अब मौजूदा वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही में हमें बैंक के मासिक एवं अर्धवार्षिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित रखते हुए कारोबार में वृद्धि के क्रम को जारी रखना है। राजभाषा सहित कारोबार वृद्धि के सभी मापदंडों पर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन की आशा करते हुए मैं सभी साथियों को आगामी उत्सवों यथा स्वतन्त्रता दिवस, गणेश चतुर्थी, बैंक के स्थापना दिवस आदि के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

मुख्य महाप्रबंधक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "बीओआई वार्ता" के जून 2025 अंक के माध्यम से आपसे संपर्क करना मेरे लिए हर्ष का विषय है। हमारी हिन्दी गृह पत्रिका के तौर पर 'बीओआई वार्ता' विविध साहित्यिक विधाओं के माध्यम से स्टाफ सदस्यों के ज्ञान और अनुभव में संवर्धन करने की भूमिका बखूबी निभा रही है। सफ़र पर केंद्रित यह अंक एक बैंकर के तौर पर हमारे जीवन के विभिन्न अध्यायों से जुड़ा हुआ है। अपने कार्यकाल के दौरान हमें अनेक स्थानों पर सेवाएँ देने का अवसर मिलता है, जो कभी आनंददायक, तो कभी अंग्रेजी शब्द 'सफर' से भरा होता है।

वित्तीय सेवाओं से जुड़े होने के नाते मेरा मानना है कि यात्राएं अर्थव्यवस्था के लिए बहुत जरूरी हैं। यात्राओं से लोगों को रोजगार मिलता है, धन का परिभ्रमण होता है, जिससे आर्थिक विकास के अवसर उत्पन्न होते हैं। नए स्थानों पर नई वस्तुएँ देखने को मिलती हैं, जिससे उनकी मांग बढ़ती है और कारोबार बढ़ता है। इसलिए प्राचीन कथाओं में भी तीर्थयात्राओं को बहुत महत्व दिया गया है। आप जानते ही हैं कि बैंक ऑफ इंडिया के परिसर में कभी सूर्य अस्त नहीं होता, अर्थात् हमारी वैश्विक उपस्थिति के कारण हम अनेक देशों में कार्य करने और यात्रा करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। इस वित्तीय वर्ष में हम 15 लाख करोड़ रुपये के कारोबार मिक्स को प्राप्त करके एक नए मुकाम तक पहुँच चुके हैं। सभी स्टाफ सदस्य कारोबार में वृद्धि की इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए बधाई के पात्र हैं।

इस अंक में यात्राओं से संबंधित आलेख, कहानी, कविताएँ, यात्रा वृत्तांत, पुस्तक समीक्षा आदि का प्रकाशन किया जाना सराहनीय है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि हमारे साथी उत्कृष्ट कार्यक्षमता का प्रदर्शन करने के साथ-साथ लेखन एवं अन्य विविध रचनाशील गतिविधियों में भी अपनी उपस्थिति सशक्त रूप से दर्ज़ करवाते हैं। मुझे उम्मीद है कि यह अंक आपके मन में उत्सुकता और रोमांच भर देगा। मैं स्टार परिवार के सभी सदस्यों से जमाराशियों और अग्रिमों में निरंतर वृद्धि की यात्रा को अनवरत जारी रखने का आग्रह करते हुए, आप सभी के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

शुभकामाओं सहित,

भवदीय,

(अभिजीत बोस)
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

कहा जाता है कि "जीवन स्वयं एक यात्रा है और हमारी यात्राएँ उस जीवन के भीतर अनुभवों के टिमटिमाते सितारे हैं।" इस बार 'बीओआई वार्ता' के लिए हमें स्टाफ सदस्यों की ओर से यात्रा संबंधी साहित्यिक सामग्री बहुतायत मिली है। इसलिए जून 2025 अंक को **"यात्रा विशेषांक"** के तौर पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया और जैसा कि कार्यपालक निदेशक महोदय ने भी अपने संदेश में कहा कि जून तिमाही यात्राओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है। यात्राएँ जीवन में एक नयापन लेकर आती हैं। अक्सर वे हमारे भीतर एक मौन-सा संवाद शुरू करती हैं जो कभी प्रकृति से, कभी इतिहास से, तो कभी स्वयं से जुड़ा होता है। पहाड़ी पर बसे किसी गाँव की भोर का स्पर्श, समंदर की लहरों का संगीत, किसी देवालय की घंटियों की गूँज या किसी अनजाने शहर की गलियों में खो जाने का अनुभव आदि हमारे लिए केवल दृश्य नहीं हैं, बल्कि अंतर्मन पर अंकित स्थायी रेखाचित्र हैं।

हमारा बैंक भी अस्तित्व में आने के बाद से 118 वर्षों की यात्रा कर चुका है और कारोबार की दृष्टि से गत वर्ष की यात्रा का अनुभव हम सभी के लिए उत्साहवर्धक रहा है। हमारे देश में अनेक सरकारी संस्थानों के राजभाषा अनुभाग एवं भारत सरकार का राजभाषा विभाग भी पचास वर्षों की यात्रा पूरी कर चुके हैं। इसलिए यह अंक केवल यात्रा वृत्तांतों का संकलन नहीं है, बल्कि यह हमारे साथियों के अनुभवों को साझा करने की यात्रा है। एक-दूसरे को जानने, समझने और महसूस करने का एक सेतु है। यह अंक प्रमाण है कि बैंकर की कार्यशैली जितनी विविधतापूर्ण है, उनके विचार, भावनाएँ, और दृष्टिकोण भी उतने ही समृद्ध हैं।

आइए, इस अंक के पन्नों को पलटकर, हम अपने साथियों की आँखों से दुनिया को देखें। आशा है कि यह अंक न केवल आपको पढ़ने में रुचिकर लगेगा, बल्कि आपके भीतर भी कहीं किसी हलचल को जन्म देगा, एक नई यात्रा के लिए, या फिर जीवन को एक नये दृष्टिकोण से देखने के लिए। संपादकीय टीम आपकी प्रतिक्रियाओं की राह देखेगी।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(बिश्वजित मिश्र)
महाप्रबंधक

मनमोहक मेघालय

विनय कुमार सिंह
आंचलिक प्रबंधक
गुवाहाटी अंचल

वैसे तो घूमने के लिए जो जगह अमूमन लोगों के जेहन में आती हैं, उनमें से पूर्वोत्तर की कुछ जगहों का नाम रहता ही है और अगर पहाड़ और ठंडक के लिए आप सोचें तो शिलांग (मेघालय), तवांग (अरुणाचल प्रदेश) और आइज़वाल (मिजोरम) सबसे बेहतर जगहों में से एक हैं। मेघालय में न सिर्फ शिलांग के पहाड़ और झरने हैं बल्कि चेरापूंजी भी हैं जो एक समय में सर्वाधिक वर्षा के लिए पूरी दुनियाँ में मशहूर था। साथ ही डावकी नदी भी है जिसका पानी लगभग साल के छह महीने तक पारदर्शी रहता है और उसमें नौकायन करते हुए आप उस नदी की तलहटी साफ साफ देख सकते हैं। मेघालय में एक और प्रसिद्ध स्थान है, 'मावलोंग' जो कि एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव है और वहाँ जाकर यह यक़ीन करना कि यह गाँव हिन्दुस्तान में ही है, थोड़ा मुश्किल होता है। मेघालय का मतलब है "मेघों का देश", यानी जहाँ बादल निवास करते हों और पूरे मेघालय में आपको जगह जगह आभास होगा कि यहाँ बादल सचमुच में निवास करते हैं। मेघालय में तीन मुख्य जनजातियाँ पायी जाती हैं, खासी, जयंतिया और गारो। इन जनजातियों का निवास खासी हिल्स, जयंतिया हिल्स और गारो हिल्स में हैं। इनके यहाँ महिलाओं को हर तरह की आज़ादी है और ये परिवार की मुखिया होती हैं।

वैसे तो शिलांग में ही इतनी जगहें हैं जिन्हें देखने के लिए आपको पूरा दिन भी कम पड़ जाएगा लेकिन अगर आप सड़क मार्ग से शिलांग जा रहे हैं तो लगभग 30 किमी पहले ही एक बेहद खूबसूरत और शांत झील आपके सामने आती है जिसे देखे बगैर आप आगे नहीं बढ़ सकते। इस झील का नाम उमियम झील है (इसे बड़ा पानी भी कहते हैं) और यह चारों तरफ पहाड़ों से घिरी हुई है और इसका पानी साफ है जिसके चलते आप यहाँ नौकायन किये बगैर रह नहीं सकते। वैसे तो आप जैसे ही गुवाहाटी से आगे बढ़ते हैं और मेघालय में प्रवेश करते हैं, पहाड़ आप के साथ साथ चलने लगते हैं और सड़क सांप की तरह बल खाते हुए आगे बढ़ती है। चारों तरफ की हरियाली आपको मंत्रमुग्ध कर देती है। यह झील उमियम नदी पर बने बाँध से बनी है और यहाँ पर झील के किनारे किनारे आप सुकून के साथ घंटो टहल सकते हैं। यहाँ जल क्रीड़ा के लिए भी अनेक साधन उपलब्ध हैं। पास में ही बढ़िया होटल हैं जहाँ जलपान से लेकर बेहतरीन भोजन का आनंद भी आप उठा सकते हैं।

आप जब शिलांग शहर पहुँच जाएंगे तो वहाँ पर बहुत सी जगहें आपको बुलाएंगी। अगर आपको वाटर फॉल पसंद है तो एलिफेंट वाटर फॉल शहर में ही है और वहाँ तीन वाटर फॉल आपको देखने को मिलेंगे। आपको थोड़ा नीचे तक जाना पड़ेगा जहाँ आपको आखिरी वाटर फॉल मिलेगा और उसकी दूसरी तरफ हरियाली भी मिलेगी। वैसे तो एक ही वाटर फॉल है लेकिन तीन अलग अलग जगहों से आपको इसे देखना पड़ता है जिसके चलते लगता है जैसे तीन हों। वहां आप चाहे तो मेघालय के पारम्परिक वस्त्र पहनकर तस्वीरें खिंचवा सकते हैं और जिंदगी भर के लिए यादें संजो सकते हैं। एक दो घंटे यहाँ बिताकर आप आसपास की जगहों की तरफ रुख कर सकते हैं और एक अन्य झील 'वर्ड लेक' में आप घूमते हुए घंटों बिता सकते हैं। अगर आप मई जून में यहाँ आते हैं तो इस झील के चारों तरफ बने पार्क में जकरण्डा के फूलों से लदे पेड़ आपको खूब नजर आएंगे और वो आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाएंगे। यहाँ से निकलने के बाद शिलांग व्यू पॉइंट भी एक ऐसी जगह है जिसे आप छोड़ नहीं सकते। चूँकि यह मिलिट्री क्षेत्र में आता है तो यहाँ पर अलग टैक्सी सर्विस चलती है जो आपको दस मिनट में व्यू पॉइंट तक ले जायेगी। बारी बारी से टैक्सियां आती हैं और लोग उसमें सवार होकर व्यू पॉइंट तक जाते हैं और किसी भी टैक्सी में सवार होकर वापस आ जाते हैं। यहाँ पर ऊँचाई से आप शिलांग की खूबसूरती को भरपूर देख सकते हैं। शिलांग में एक संग्रहालय भी मौजूद है जिसका नाम "डॉन बास्को म्यूजियम" है जो

चार फ्लोर में बना है और यहाँ पूरे पूर्वोत्तर की संस्कृति को आप देख सकते हैं। सबसे ऊपर जाकर आप पूरे शिलांग का नयनाभिराम दृश्य भी देख सकते हैं। शिलांग के पास में ही स्थित लाईटलुम है जो बेहद ख़ूबसूरत स्थान है और इसे आप पहाड़ों का आखिरी पॉइंट समझ सकते हैं। यहाँ से आप हरे भरे पहाड़ के साथ साथ गहरी वैली, जिसमें गाँव दिखाई पड़ते हैं, देख सकते हैं और अगर आप यहाँ मानसून में जाते हैं तो बादलों से भी रूबरू हो सकते हैं। यहाँ का सूर्यास्त आपको जिंदगी भर के लिए याद रहेगा क्योंकि इसका नजारा बेहद ख़ूबसूरत होता है।

रात को यहाँ के सबसे मशहूर बाजार 'पुलिस बाजार' घूमने का लुत्फ उठाया जा सकता है। मेघालय में महिलाएं अक्सर दुकान संभालती हैं और कुछ राज्य जैसे मणिपुर में तो महिलाओं द्वारा संचालित पूरा बाजार ही है जो पूरे एशिया में सबसे बड़ा माना जाता है। उत्तर भारतीय या मध्य भारत के लोगों के लिए यह किसी अजूबे से कम नहीं होता है। यहाँ तमाम तरह के स्थानीय फल, सब्जियां, कपड़े, ऊनी वस्त्र और अन्य सामग्री मिलती हैं जिन्हें आप अपनी जरुरत के हिसाब से खरीद सकते हैं। एक गिरजाघर भी है जो खूब बड़ा है और साथ में छोटा सा पार्क भी जहाँ आप टहल कर घंटो समय बिता सकते हैं। यहाँ शाकाहारी भोजन ढूंढना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

दूसरे दिन सुबह के नाश्ते के बाद आप दो जगहों में से किसी एक जगह को चुन सकते हैं, या तो दुनियाँ की सबसे ज्यादा बरसात वाली जगह 'चेरापूंजी' या एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव 'मावलोंग'। दोनों जगहों में आजकल तमाम होमस्टे खुल गए हैं जहाँ आप कम कीमत में मजे में सपरिवार रह सकते हैं और सुकून महसूस कर सकते हैं।

अगर आप जून जुलाई में इधर आते हैं तो चारों तरफ फैली हरियाली आपका मन मोह लेती है। कुछ आगे जाने पर अगर आप एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव मावलोंग के लिए आगे बढ़ते हैं तो आप वहाँ के अलावा एक और बेहद ख़ूबसूरत नदी डावकी को भी देख सकते हैं जहाँ का पानी इतना पारदर्शी है कि आप ऊपर नाव में बैठकर नीचे तलहटी को साफ साफ देख सकें। गाँव के अंदर सड़कें इतनी चमकती हुई और साफ हैं कि अगर आपके हाथ में कुछ भी है जिसे आप फेंकना चाहते हैं तो आप उसे सिर्फ कूड़ेदान में ही फेकने पर मजबूर हो जाएंगे। कहीं भी आपको गन्दगी नजर नहीं आएगी, एक कागज का टुकड़ा भी सड़क पर नज़र नहीं आएगा और घर भी आपको बिलकुल साफ सुथरे दिखाई पड़ेंगे। यह सारा मावलोंग गाँव के लोग मिल जुलकर करते हैं और इस बात का ध्यान रखते हैं कि वहाँ आने वाला अतिथि भी इस बात का पूरा ख्याल रखे। गाँव में कई होम स्टे हैं जहाँ आप आराम से एक दो दिन रुक सकते हैं और वहाँ के वातावरण का पूरा लुत्फ़ उठा सकते हैं।

यहाँ रात बिताने के बाद, आप सुबह जल्दी ही डावकी नदी के लिए निकल लीजिये जिसका रास्ता भी घुमावदार और हरियाली से भरा है। आगे बढ़ने पर रास्ता खराब मिलेगा और आप धीरे धीरे डावकी नदी के पास पहुँच जायेंगे। सड़क के ऊपर से ही आपको नदी पर तैरती सैकड़ों नाव नजर आएँगी और ऊपर सड़क पर ही कोई न कोई नाव वाला आपको पकड़ लेगा जो आपको अपनी नाव में सैर कराएगा। जब आप ऊपर सड़क से नदी के लिए नीचे उतरते हैं तो एक नजर में आपको यह एक सामान्य नदी ही नज़र आती है जहाँ पर आप नौकायन कर सकते हैं और साफ पानी से नीचे देख सकते हैं। लेकिन जब आप नदी के किनारे से नदी के दूसरे छोर को देखते हैं तो आपको पता चलता है कि नदी के उस पार हिन्दुस्तान नहीं है बल्कि बांग्लादेश है और बीच में कोई दीवार भी नहीं है। मतलब यह नदी ही दोनों देशों को अलग करती है और इस पार हिन्दुस्तानी लोग नौकायन करते हैं तो उस पार बांग्लादेशी लोग। दोनों तरफ के नाव वाले अपनी सीमा में ही नाव चलाते हैं और आप नदी में घूमते हुए दोनों देशों को देख सकते हैं।

जैसे ही आप थोड़ा आगे बढ़ते हैं तो चारों तरफ चट्टानों से घिरी नदी आपका मन मोह लेगी। नदी के ऊपर से गुजरता हुआ पुल आप नीचे से देखेंगे तो रोमांच भर आएगा। आप नदी में इस किनारे नहा भी सकते हैं और नदी के उस तरफ भी आपको नौकायन करते और नहाते हुए तमाम पर्यटक नज़र आएंगे। खैर यहाँ से आपको जाने की इच्छा तो नहीं होगी लेकिन चूँकि आपके पास समय सीमित होता है इसलिए यहाँ से आगे बढ़ना ही होगा। डावकी नदी से लगभग 11 किमी दूर एक जीवित रुट ब्रिज है जो यहाँ के दर्शनीय स्थानों में से एक है। डावकी से आप आधे घंटे में यहाँ पहुँच सकते हैं और फिर एक बार आप प्रकृति के एक अजूबे से दो चार होंगे। जीवित रुट ब्रिज पूर्वी खासी पहाड़ी में रहने वाले खासी जनजातियों के प्रकृति से अनोखे जुड़ाव को दर्शाता है जिसमे पुल का निर्माण पेड़ों के जड़, तने और टहनियों से होता है। इस क्षेत्र में इस प्रकार के कई पुल पाए जाते हैं। इस पुल के ऊपर से आप टहल सकते हैं जिसके नीचे से जलप्रपात का पानी बहता रहता है और आप घंटों इस अद्‌भुत दृश्य को निहार सकते हैं।

पीढ़ियों का सफर, अतीत से भविष्य तक

अरविंद कुमार
बैंक ऑफ इंडिया
मुख्य प्रबन्धक
गया अंचल

कालोऽयम् परिवर्तनं यत्र, यथा पीढ़ी चिन्तयन्ति नवम्।
कर्मयोगे स्थिरं मनः कुर्यात्, स्वधर्मे विश्वासं शान्तं च यत्।
आत्मा शाश्वता, न त्यजेत् कदा च। -साभार गीता ज्ञान

पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपरिहार्य परिवर्तन हमारे मन को अस्थिर करते रहेंगे, लेकिन भीतर के विश्वास को दृढ़ करते हुए कर्म पर ध्यान केन्द्रित करके हम अनिश्चितताओं के बीच भी स्थिर रह पाएंगे, क्योंकि अस्तित्व (आत्मा) के अतिरिक्त सर्वस्व परिवर्तनशील है।

मानव समाज के उत्तरोत्तर विकास में विभिन्न पीढ़ियों का योगदान अद्वितीय है। हर पीढ़ी अपने समय की विभिन्न परिस्थितियों, चुनौतियों और उपलब्धियों के साथ विकसित होती रही है। उदाहरण स्वरूप 1901-1927 के बीच जन्मी 'द ग्रेटेस्ट जेनेरेशन' ने अपने जीवनकाल में भीषण महामंदी और बतौर सैनिक द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया था। 1928-1945 के बीच जन्मी 'साइलेंट जेनरेशन' ने आर्थिक मंदी और युद्ध के दौर में अनुशासन एवं धैर्य का परिचय दिया। 1946-1964 के बीच जन्मी 'बेबी बूमर्स' ने अपना जीवन आर्थिक समृद्धि और सामाजिक न्याय के लिए न्योछावर किया। 1965- 1979 के बीच जन्मी 'जेनरेशन एक्स' ने स्वतंत्रता, उद्यमशीलता और डिजिटल युग की नींव रखी। 1980 - 1994 के बीच जन्मी 'जेनेरेशन वाई अथवा जेनरेशन मिलेनियल्स' ने तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और पर्यावरण जागरूकता में अग्रणी भूमिका निभाई। 1995 - 2009 के बीच जन्मी 'जेनरेशन जेड अथवा जेनेरेशन आइजेन' स्मार्टफोन और उन्नत तकनीक के परिवेश में पली, जहां मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर चर्चा होती है। 2010 - 2024 के बीच जन्मी वर्तमान की जेनेरेशन अल्फा तकनीकी कौशल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और सतत विकास के मूल्यों को आत्मसात कर रही है क्योंकि उनके जन्म से पहले से ही सोशल मीडिया और इंटरनेट उपलब्ध है। 2025 - 2039 के बीच जन्म लेने वाली एक नई जेनरेशन जिसका नाम "जेनरेशन बीटा" रखा गया है, वह एक ऐसी पीढ़ी होगी, जिनमें से अधिकतर 22वीं शताब्दी को देखेंगे; साथ ही यह जेनरेशन अब तक की सबसे स्मार्ट और एड्वान्स जेनरेशन होगी, क्योंकि ये ऐसे युग में पैदा हो रही है जहां आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और वर्चुअल रियालिटि जैसी टेक्नोलोजी सहज उपलब्ध है।

वैश्विक जनसंख्या में विभिन्न पीढ़ियों की मौजूदा और भावी स्थिति का आकलन -

जेनरेशन	वर्तमान में	2035 तक
साइलेंट जेन	3%	--
बेबी बूमर	13%	8%
जेन एक्स	17%	14%
जेन वाई	21%	19%
जेन जेड	23%	20%
जेन अल्फा	23%	23%
जेन बीटा	--	16%

सभी पीढ़ियाँ अपने जीवनकाल के सामाजिक और आर्थिक परिवेश के अनुसार कर्म करती हैं। समय के साथ पिछली पीढ़ियाँ अपने अनुभवों और ज्ञान को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाती हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी होने वाला यह संवाद और सहयोग न केवल अतीत की गलतियों से सीखने में मददगार है, बल्कि यह भविष्य के मार्ग को सरल और स्पष्ट बनाने में भी सहायता करता है। विभिन्न पीढ़ियों का योगदान और उनकी चुनौतियां निम्नलिखित हैं:

ग्रेटेस्ट जेनरेशनः

संघर्षों की धारा में, हथियार धारण किए चले वो,
संसाधनों का संकट झेल, युद्धों की आग में जले वो।
महामारी हो या अकाल, हर मोड़ पे थी कठिनाई,
शक्ति, समर्पण और साहस से भविष्य की डगर बनाई।।

1901 से 1928 के बीच जन्मी इस जेनेरेशन ने भयानक महामंदी और द्वितीय विश्व युद्ध जैसे कठिन समय का सामना किया था। हालांकि यह पीढ़ी संघर्षों से गुज़री, लेकिन इससे उन्हें संघर्ष की शक्ति, समर्पण और अपने समाज की रक्षा के मूल्य को समझने का अवसर मिला। इस पीढ़ी ने मूल्यों और सिद्धांतों की जो नींव रखी, वो बाद में 'बेबी बूमर्स' और 'जेनरेशन एक्स' के लिए प्रेरणा बनी।

साइलेंट जेनरेशनः

मंदी, युद्धों और परमाणु विस्फोटों के सन्नाटे में,
सहनशक्ति की सीमा दिखाई।
नम आँखों संग गहन मौन में,
भारी मन से प्रलयकारी रात बिताई।

1928 से 1945 के बीच जन्मी यह एक ऐसी पीढ़ी है जिसे उस समय की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों ने झकझोर डाला। इस पीढ़ी के लोगों ने द्वितीय विश्व युद्ध, आर्थिक मंदी और सामाजिक अशांति जैसी घटनाओं के बीच जीवन गुजारा। उन्हें साइलेंट पीढ़ी कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि वे चुप रहे, बल्कि यह शब्द उनके जीवन में व्याप्त गंभीरता, अनुशासन और सहनशक्ति का परिचायक है। अगली पीढ़ी 'बेबी बूमर्स (1946-1964)' के समय में जब दुनिया में सामाजिक न्याय और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हो रहा था, तो उनकी प्रतिक्रिया आर्थिक समृद्धि, सामाजिक परिवर्तन और समानता की पक्षधर थी। उनके संघर्षों और विचारों के परिणामस्वरूप, हमें आज एक अधिक समावेशी और विविधता से भरा समाज मिला है।

जेनरेशन एक्सः

जेनरेशन एक्स, जिनका जन्म 1965 से 1979 के बीच हुआ था, ने एक ऐसे दौर में अपनी पहचान बनाई, जब समाज और अर्थव्यवस्था तेजी से बदल रहे थे। सामाजिक और पारिवारिक ढांचे में बदलाव, कामकाजी महिलाओं की बढ़ती संख्या, और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति, इन सब ने मिलकर इस पीढ़ी को एक नई सोच और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस पीढ़ी ने उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया तथा इंटरनेट और अन्य डिजिटल उपकरणों के आगमन के साथ एक नई डिजिटल संस्कृति का निर्माण किया।

साथ ही, जेनरेशन एक्स ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और अपनी राय रखने के अधिकार को अधिक महत्व दिया, जो समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले गया। इस पीढ़ी को 'खोई हुई पीढ़ी' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह अपनी पूर्ववर्ती बेबी बूमर पीढ़ी और आगामी मिलेनियल पीढ़ी के बीच खड़ी रहकर, दोनों पीढ़ियों की विशेषताओं को समान रूप से अपनाने में कामयाब रही।

मिलेनियल्स या जेनरेशन वाईः

इस पीढ़ी ने तकनीकी प्रगति और वैश्विकरण को भी अपनाया। साथ ही, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता को भी अहमियत दी। यह पीढ़ी सोशल मीडिया के उदय के साथ पली-बढ़ी, जिसने उन्हें समाज के मुद्दों पर जल्दी प्रतिक्रिया देने और संवाद करने की क्षमता प्रदान की। इस पीढ़ी ने नवाचार, सतत विकास और डिजिटल परिवर्तन के लिए बड़े कदम उठाए, जो आज भी समाज के कई क्षेत्रों में असर दिखा रहे हैं। सोशल मीडिया के उदय ने मिलेनियल्स की जीवनशैली को पूरी तरह से बदल दिया। इस पीढ़ी की युवावस्था के दौर में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का विकास हुआ। इन प्लेटफार्म्स ने न केवल व्यक्तिगत कनेक्शन को बढ़ाया, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर जल्दी प्रतिक्रिया देने और बदलाव के लिए आंदोलन खड़ा करने की क्षमता भी प्रदान की। मिलेनियल्स के लिए सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि यह एक प्रभावी संवाद का मंच बन गया। उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से जन आंदोलनों का हिस्सा बनते हुए समाज में बदलाव के लिए जोरदार आवाज उठाई।

जेनरेशन जेडः

इस पीढ़ी ने अपना बचपन स्मार्टफोन और इंटरनेट के दौर में

गुजारा तथा उनके लिए मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-देखभाल और सामाजिक न्याय के मुद्दे महत्वपूर्ण बन गए। इस पीढ़ी ने एक खुले संवाद के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य, विविधता और समावेशिता के विषयों पर चर्चा की, जो अब सामाजिक रूप से स्वीकृत हो गए हैं। जेनरेशन जेड ने डिजिटल परिवर्तन के साथ अपने जीवन का तालमेल बैठाया और वर्क फ्रॉम होम, फ्री-लेंसिंग जैसी कार्य संस्कृति को जन्म दिया। इस पीढ़ी के योगदान से मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समानता और समावेशिता अब समाज के महत्वपूर्ण और स्वीकृत मुद्दे बन गए हैं। जेनरेशन जेड ने यह सिद्ध किया कि एक सशक्त, समावेशी और संवेदनशील समाज की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए खुला संवाद और जागरूकता आवश्यक हैं।

जेनेरेशन अल्फा:

जेनेरेशन अल्फा वह पीढ़ी है जो 2010 के बाद जन्मी है, और यह पूरी तरह से डिजिटल युग में पल-बढ़ रही है। वे बच्चों की ऐसी पहली पीढ़ी हैं, जिनके लिए स्मार्ट डिवाइस जनरलाइज होने के कारण जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। स्मार्टफोन, टैबलेट, रोबोट्स और वॉयस असिस्टेंट्स उनके लिए रोजमर्रा उपयोग के साधन हैं। इस पीढ़ी के बच्चे न केवल इंटरनेट के साथ सहज हैं, बल्कि डिजिटल दुनिया में उनकी स्थिति और अनुभव पुरानी पीढ़ियों से कहीं अधिक विकसित और तीव्र हैं। जेनेरेशन अल्फा को हम 'नेटिव डिजिटल्स' कह सकते हैं, क्योंकि वे तकनीकी परिवर्तनों के बीच ही जन्मे हैं और बड़े हो रहे हैं। ये सब उनके संवाद और शिक्षा के माध्यम हैं तथा इस पीढ़ी का जीवन डिजिटल रूप में अधिक कनेक्टेड और इंटरएक्टिव है। जहाँ एक ओर यह पीढ़ी बहुत स्मार्ट और तकनीकी रूप से सक्षम है, वहीं दूसरी ओर यह चुनौती भी है कि यह पीढ़ी कहीं मानवीय संबंधों और भावनाओं को समझने में पीछे न रह जाए। अगर सही दिशा में मार्गदर्शन मिले, तो जेनेरेशन अल्फा भविष्य में अभूतपूर्व विकास और नवाचार की प्रतीक बन सकती है।

जेनरेशन बीटा:

अब हम एक नई पीढ़ी की ओर बढ़ चले हैं, जिसका नाम 'जेनरेशन बीटा' है। यह पीढ़ी 2025 और 2039 के बीच जन्मे लोगों की होगी और यह पीढ़ी सबसे स्मार्ट और उन्नत पीढ़ी होगी। जेन बीटा का नाम भी अल्फा की तरह ही ग्रीक वर्णमाला से लिया गया है। सामाजिक विश्लेषक और जनसांख्यिकी विशेषज्ञ मार्क मैकक्रिण्डल का कहना है कि यह पीढ़ियों के नामकरण का एक तरीका है, जिससे पता चलता है कि एक नए युग की शुरुआत होने जा रही है। जेन बीटा एक संक्षिप्त शब्द है, जिसका उपयोग ज़्यादातर उन युवाओं और बच्चों के लिए किया जाता है, जो 2020 और उसके बाद जन्मे हैं। यह पीढ़ी जेनरेशन अल्फा के कुछ शुरुआती सदस्य हैं, लेकिन उनके लिए तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए उन्हें अलग से पहचान दी गयी है। जेन बीटा हमारी विकसित होती दुनिया के एक महत्वपूर्ण अध्याय का प्रतिनिधित्व करता है। आमतौर पर 'बीटा' एक सॉफ़्टवेयर टेस्टिंग चरण को दर्शाता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह पीढ़ी अभी विकास के एक प्रारंभिक दौर में है और बहुत से तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करेगी।

तकनीकी प्रगति के साथ, जेनरेशन बीटा संवाद और सहयोग के नए तरीके विकसित करेगी। यह पीढ़ी अधिक डिजिटल और वर्चुअल कार्य वातावरण में काम करेगी, जहाँ डिजिटल प्लेटफॉर्म और क्लाउड आधारित सेवाओं का उपयोग बढ़ेगा। वे ऑनलाइन मीटिंग्स, वर्चुअल टीमवर्क, और स्मार्ट कार्यस्थलों के माध्यम से सहयोग करेंगे, जो अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को पार करने में सक्षम होंगे।

मानव समाज का विकास कई पीढ़ियों के योगदान से हुआ है। प्रत्येक पीढ़ी ने अपने समय की विभिन्न परिस्थितियों, चुनौतियों और उपलब्धियों के बीच अपनी भूमिका निभाई है। हर पीढ़ी अपने समय के साथ विकसित होती है और उसकी अनूठी विशेषताएँ होती हैं। हम जानते हैं कि प्रौद्योगिकी, सामाजिक संरचनाएँ, राजनीतिक बदलाव और वैश्विक मुद्दों के प्रभाव में पीढ़ियाँ समय के साथ बदलती हैं। पिछले कुछ दशकों में यह स्पष्ट हुआ है कि तकनीकी प्रगति और वैश्विकरण ने समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अतीत से वर्तमान, भविष्य तक का है सफर,
हर पीढ़ी अपने अंदाज़ में तय कर रही डगर।
नयी कोंपले आसमान छूने का कर रही प्रयास,
लेकिन जड़ों के संघर्ष बिना संभव नहीं विकास।

स्मृति विशेष : पुरी की रथ यात्रा

देबोश्री जेला
वरिष्ठ प्रबन्धक
जोखिम प्रबंधन विभाग
बारासात आंचलिक कार्यालय

भारत एक ऐसा देश है जहां हर राज्य, हर प्रांत की अपनी एक अनोखी संस्कृति है। हमारे देश में मनाए जाने वाले पर्व सिर्फ उत्सव नहीं, बल्कि आस्था का जीता-जागता रूप होते हैं। हज़ारों त्योहारों के बीच एक ऐसा पर्व, जिसे मैं अपने दिल के सबसे करीब महसूस करती हूँ वो है 'पुरी की रथ यात्रा'। ओडिशा के पुरी में प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर भगवान श्री कृष्ण को समर्पित है, जिनका नाम, वर्चस्व और महिमा पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। इसी मंदिर से जुड़ी है यह विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा।

यह एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलभद्र और छोटी बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर मंदिर से बाहर निकलते हैं और आम जनता के बीच आते हैं। यह ईश्वर की तरफ से एक संदेश है कि 'सब मनिसा मोर परजा' अर्थात् सभी मनुष्य मेरी प्रजा हैं।

मुझे आज भी याद है जब मैं पहली बार कई वर्षो पहले रथ यात्रा देखने गई थी। लोगों का इतना हुजूम था कि अगर आप ऊंचाई से देखो, तो सिर्फ सिर ही सिर दिखाई देते हैं। हर दिशा से 'जय जगन्नाथ' की गूंज, घंटियों की ध्वनियाँ और भक्ति में डूबे लोग, ऐसा लगता है मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। इस यात्रा के लिए कुल तीन रथ बनाए जाते है। इन रथों का निर्माण कोई छोटी बात नहीं है, लगभग तीन-चार महीने पहले काम शुरू हो जाता है। अद्‌भुत बात यह है कि इन रथों के लिए जो लकड़ी लगती है, वो पूरी तरह भक्तों द्वारा दान में दी जाती है। कोई एक लकड़ी लाता है, कोई दस, जैसी जिसकी श्रद्धा और ये रथ हर साल पूरी तरह से नए बनाए जाते हैं। एक भी पुराना हिस्सा दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जाता।

पुरी की रथ यात्रा में तीन भव्य रथ भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के लिए बनाए जाते हैं, जिनके नाम, रंग, आकार और प्रतीक भी विशिष्ट होते हैं। यह तीनों रथ हर वर्ष गुंडिचा मंदिर की ओर बढ़ते हैं, जिसे भगवान की मौसी का घर माना जाता है। कथा के अनुसार, भगवान अपनी मौसी के घर वर्ष में एक बार नौ दिनों के लिए जाते हैं और वहीं कुछ समय विश्राम करते हैं, जिससे भक्तों को यह संदेश भी मिलता है कि भगवान भी अपने स्नेही संबंधों को निभाते हैं। भगवान जगन्नाथ का रथ नन्दीघोष कहलाता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 45 फीट होती है, इसमें 16 पहिए होते हैं और इसका रंग लाल व पीला होता है। इस पर गरुड़ध्वज लहराता है और इसकी रस्सी का नाम शंखचूड़ा होता है। यह सबसे बड़ा और आकर्षक रथ होता है। भगवान बलभद्र का रथ तलध्वज कहलाता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 44 फीट और इसमें 14 पहिए होते हैं, यह लाल व हरे रंग का होता है। इसमें तलध्वज फहराया जाता है और इसकी रस्सी का नाम वासुकी है। यह रथ शक्ति और संतुलन का प्रतीक है। माता सुभद्रा का रथ दर्पदलन कहलाता है, जिसकी ऊँचाई लगभग 43 फीट होती है, इसमें 12 पहिए होते हैं और इसका रंग काला व लाल होता है। इस पर पद्मध्वज लहराता है और इसकी रस्सी को स्वर्णचूड़ा कहा जाता है। 'दर्पदलन' का अर्थ होता है अहंकार को चूर करने वाली, और यह रथ नम्रता तथा करुणा का प्रतीक माना जाता है। तीनों रथों की यह यात्रा एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र नहीं, बल्कि प्रेम, परिवार और लोक परंपरा का जीवंत उदाहरण भी है।अब तो टेक्नोलॉजी इतनी आगे बढ़ गई है कि रथ यात्रा का लाइव टेलिकास्ट भी होता है। लोग अब घर पर बैठकर टीवी और मोबाइल से भी ये अद्भुत दृश्य देख सकते हैं लेकिन जो अनुभव वहाँ जाकर मिलता है वो आपको सिर्फ आपकी आत्मा ही बता सकती है।

रथ यात्रा मेरे लिए केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि एक जीवंत स्मृति है, एक आस्था की यात्रा है जिसमें मुझे यह महसूस होता है कि भगवान मेरे सामने हैं, मेरे साथ हैं, मेरे अपने हैं। पुरी की रथ यात्रा हमें सिखाती है कि भक्ति किसी एक मंदिर में बंद नहीं होती, जब भगवान स्वयं भक्तों के बीच आते हैं, तो भक्ति का अर्थ और गहराई से समझ आता है।

अगर आपने अब तक रथ यात्रा को नहीं देखा है, तो मैं दिल से कहूँगी कि एक बार जरूर जाइए, क्योंकि ये केवल दर्शन नहीं, एक अनुभव है, जो जीवन भर साथ रहता है।

लघु एवं कुटीर उद्यमों की ‘लोकल से ग्लोबल’ तक की यात्रा

रौशन कुमार
सागरपुर शाखा
गया अंचल

18वीं सदी के अंत तक यूरोपीय देशों तथा ईस्ट इंडिया कंपनी ने सोची समझी रणनीति के तहत भारतीय कुटीर उद्योगों को तबाह कर दिया था। आज हमें आवश्यकता है “वोकल फॉर लोकल” से होते हुए “लोकल से ग्लोबल” होने की, ताकि हम अपने प्राचीन गौरव को पुन: स्थापित कर, भारत को आत्मनिर्भर एवं शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बना सकें।

प्रारम्भ से ही ग्रामीण कुटीर व लघु उद्योग भारत की पहचान रहें हैं। “लोकल से ग्लोबल” से मेक इन इंडिया को एक नई ऊर्जा मिली है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 68.84% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। अत: सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की सहायता से आत्मनिर्भरता हासिल की जाए। ये सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं क्योंकि लगभग 12 करोड़ आबादी को यहाँ रोजगार उपलब्ध है।

‘लोकल से ग्लोबल’ ‘मेक इन इंडिया’ तथा “आत्मनिर्भर भारत” का सीधा संबंध गुणवत्ता से होता हैं। केंद्र द्वारा अनुसंधान, संबंध, परिश्रम और लगन से गुणवत्तापूर्ण उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे एक ओर हमारी आयात पर निर्भरता खत्म हो जाए और दूसरी ओर स्थानीय भारतीय उत्पादों की विश्वभर में मांग बढ़े तथा हम विश्व अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण निर्यातक देश बन सकें।

इससे स्थानीय बाजार विकसित होगा तथा लोगों को रोजगार मिलेगा। धीरे-धीरे स्थानीय बाजार अपनी स्थायी पहचान निर्मित करेंगे और स्थानीय उत्पादों के निर्माण हेतु अग्रसर होंगे, जिससे अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी, महंगाई कम होगी, स्थानीय व्यवसाय, बुनकर, कारीगर इत्यादि के साथ साथ किसानों का जीवन स्तर ऊँचा होगा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में विभिन्न अवसर एवं संभावनाओं के द्वार खुलेंगे।

दीपावली एवं होली के दौरान “लोकल से ग्लोबल” का सकारात्मक प्रभाव देखा गया। विदेशों से आयातित दीपक, मूर्तियां, ईलेक्ट्रोनिक झालर, रंग और कई अन्य उत्पादों के मुकाबले स्थानीय स्तर पर निर्मित उत्पादों की रिकॉर्ड स्तर पर बिक्री हुई थी। इस पहल से अन्य त्योहारों सहित सामाजिक समारोहों में स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा, जिससे स्थानीय उत्पाद ब्रांड बनने की ओर अग्रसर होंगे तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेंगे।

कई कारणों से स्थानीय उद्योगों के आगे बढ़ने की राह कभी आसान नहीं रही, जैसे कि उपभोक्ता पहले से ही ब्रांडेड उत्पाद खरीदना पसंद करते हैं। लोगों में विदेशी उत्पाद के प्रति एक अलग किस्म का आकर्षण होता है। यहाँ तक कि व्यापारी भी मुनाफे के लालच में विदेशी उत्पाद की गुणवत्ता का गुणगान करते हुए, बेहतरीन लोकल विकल्पों को खारिज़ कर देते हैं। इस प्रकार बाजार एवं उपभोक्ताओं की संकीर्ण मानसिकता स्थानीय उत्पादों को आगे नहीं बढ़ने देती। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि स्थानीय उत्पादों की मुनाफाखोरी एवं बेईमानी भी “लोकल फॉर ग्लोबल” की राह में बहुत बड़ी बाधा है। हाल ही में उत्तर प्रदेश में स्थानीय मसाला उत्पाद में लकड़ी की भूसी समेत अखाद्य पदार्थ मिलाने का मामला आया है। उत्तराखंड के उधम सिंह नगर में स्थित आधा दर्जन कंपनियों के सैंपल फेल हो गए। यह चिंता का विषय है कि इन लोगों ने घटिया सामग्री का उत्पादन करने का अपराध तो किया ही है किन्तु यह उससे अधिक गंभीर मामला इसलिए है कि इसने “लोकल से ग्लोबल” के उद्देश्य पर चोट की है।

घरेलू बाजार में बड़े पैमाने पर विदेशी उत्पादों की उपलब्धता, आधारभूत ढाँचे का अभाव, निवेश की कमी, विदेशी ब्रांड से प्रतिस्पर्द्धा, तकनीकी संसाधनों का अभाव एवं स्थानीय उत्पादकों में बाजार की समझ का न होना, लोकल से ग्लोबल की राह में सबसे बड़ी बाधा हैं। इसके बावजूद अगस्त 2020 से अगस्त 2021 के मध्य भारत के कुल निर्यात में 33% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है।

जून-जुलाई 2021 में पूर्वोत्तर में अंगूर, त्रिपुरा से कटहल, नागालैंड से मिर्च, कानपुर से जामुन ब्रिटेन, ओमान और संयुक्त अरब अमीरात को भेजा गया। कश्मीर की मिश्रिचेरी को दुबई, हिमाचल प्रदेश के सेब को बहरीन, असम से 40 मेट्रिक टन लाल चावल, अमेरिका को तथा छत्तीसगढ़ से महुआ पहली बार फ्रांस भेजा गया। इस प्रकार भारत के अन्नदाता न सिर्फ देश का भरण पोषण कर रहे हैं बल्कि विश्व स्तर पर दस्तक देकर, विश्व के लोगों को स्थानीय उत्पादों के स्वाद का ऋणी भी बना रहे हैं। लोकल से ग्लोबल का प्रभाव ही है कि आज प्रमुख कंपनियाँ अपनी रणनीति और अभियानों में स्थानीयता को महत्व देने लगी हैं।

उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी हो तो उपभोक्ता अधिक कीमत चुका कर भी उसे खरीदना पसंद करते हैं। अत: यह जरूरी है कि स्थानीय उत्पाद बाजार में तभी अपनी पहचान बना सकते हैं जब उपभोक्ता पर अपनी छाप छोड़ें। किसी भी उत्पाद की छाप उसके प्रति मुखर लोगों की संख्या से नहीं, अपितु उसकी गुणवत्ता से तय होती है। इसके प्रभाव में ये उत्पाद प्रतिस्पर्धा वातावरण में स्वयं को स्थापित नहीं कर पाएंगे। अत: स्थानीय उत्पादों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

स्थानीय उत्पाद परंपरा, संस्कृति, भौगोलिक विशेषता और पहचान का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे- वाराणसी की रेशमी साड़ियाँ, लखनऊ की चिकनकरी, गोरखपुर की टेराकोटा की मूर्तियाँ, चंदौली का काला नमक (चावल), मधुबनी की पेंटिंग, पश्चिम बंगाल के जूट के उत्पाद आदि परंपरा और पहचान को आज भी बता रहें हैं। इस दृष्टि से 24 फरवरी 2018 को उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर "एक जिला" "एक उत्पाद" नामक एक अति महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू हुआ, जो स्थानीय उत्पादों की पहचान को निर्मित कर वैश्विक बनाने की ओर अग्रसर है।

"लोकल से ग्लोबल" से समाज के प्रत्येक आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधि के बीच परस्पर निर्भरता बढ़ी है जिससे देश में संगठित एवं कुशल श्रम शक्ति के विकास के साथ-साथ रोजगार का सृजन हुआ है, प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बना है तथा उत्पादों की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है।

दिल बनाम डेटा

कल्पनाओं की सीमा अब धुंधली होने लगी,
मशीनों की बोली में संवेदना सुनाई देने लगी,
कलम की स्याही अब कोड में ढलती है,
कृत्रिम बुद्धि भी अब कवितायें रचती है।

न सोच है, न अनुभूति की पीड़ा,
फिर भी बना ली हमने इसकी परिधि में दुनिया,
नैतिकता के पथ पर प्रश्नचिह्न खड़े हैं,
विकास के इस पथ पर हम कितना बढ़े है?

ज्ञान की इस बाढ़ में हम बह तो नहीं रहे?
अपने खुद के बनाएँ आइनों में खो तो नहीं रहे?
समय है कि सोचें हम, दिशा तय करें,
मानवता की लौ को पुन: प्रज्ज्वलित करें।

कृत्रिम नहीं, पर असली संवेदना जगाएँ,
प्रगति के साथ-साथ दिलों को भी अपनाएँ,
क्योंकि बुद्धि चाहे कितनी भी विशाल हो जाए,
दिल की बात वही समझे, जो इंसान कहलाए।

प्रियंका चक्रबर्ती
अधिकारी, दमदम शाखा
बारासात अंचल

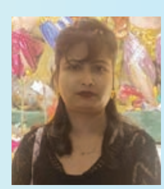

भारत का भ्रमण,
'औपनिवेशिक संध्या से अमृतकाल की भोर तक'

भास्कर सिंह रावत
राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

कालातीत इतिहास के पन्नों में, राष्ट्र भी युगों से गुज़रते हुए यात्रियों जैसे लगते हैं। उनका हर कदम उनके साहस का परिचायक है। मेरी मातृ भूमि 'भारत' भी घूमती धरा के कालचक्र का एक ऐसा ही पथिक है। आइए, भारत के भ्रमण रूपी इस महाकाव्य का नवीनतम अध्याय, भारत की जुबानी जानने का प्रयास करते हैं। यह अध्याय उपनिवेशवाद की धुंधली छाया से शुरू होकर अमृतकाल की दीप्तिमान भोर तक लिखा जा चुका है। यह उजड़ चुकी सोने की चिड़िया से पुनः आबाद होकर नए कीर्तिमान रच रहे आधुनिक भारत तक की एक महागाथा है। यह केवल घटनाओं का वृत्तांत नहीं है, बल्कि साझे मानवीय प्रयासों का एक स्वर-संगीत है, जिसका प्रत्येक स्वर अरबों आत्माओं के हृदय की धड़कनों से गूंजता है। यह यात्रा सामाजिक जागृति, आर्थिक परिवर्तन और राजनीतिक विकास के मील के पत्थरों से होकर गुजरती है।

औपनिवेश कालः एक घनी अंधेरी रात का सफर

उन्नीसवीं सदी के मध्य में, मैं ब्रिटिश राज के लौह भार तले नतमस्तक पड़ा था, प्राचीन गौरवशाली भूमि एक औपनिवेशिक मोहरे में सिमट गई थी। मेरा जनसमूह धर्म, जातियों और लैंगिक भेदभाव के कुचक्र में जड़ हो चुका था। इन कुरीतियों की प्रत्येक परत मेरी आत्मा को बाँधने वाली एक जंजीर की तरह थी। लेकिन फिर, जड़त्व के इस मौन के भीतर, परिवर्तन की एक आहट उठी। राजा राम मोहन राय जैसे दूरदर्शी मशालवाहक बनकर आए, जिन्होंने परंपराओं को चुनौती देने का साहस किया, सती प्रथा को समाप्त किया और विधवा पुनर्विवाह की वकालत की। अंग्रेजों ने, अपने प्रभुत्व की चाह में, पश्चिमी शिक्षा को लागू किया, जो एक अनपेक्षित उपहार था। इसने बुझ रहे मेरे ज्ञान के दीपक में विदेशी तेल डालकर धीमी पड़ रही लौ को एक नई ऊर्जा दी। इस लौ के प्रकाश में एक नया वर्ग उभरा शिक्षित, मुखर, बेचैन; जो अधीनता की इस इमारत पर सवाल उठाने लगा था।

आर्थिक व्यवस्था वाले मेरे हाथ, रिसते हुए घावों से पटे पड़े थे। मेरे कारीगर, जो कभी शिल्पकला के उस्ताद थे, उन्हें भारतीय माल पर कर और सस्ते ब्रिटिश माल की बाढ़ ने गुमनामी में धकेल दिया था। मेरे किसान भारी करों के बोझ तले कराह रहे थे, उनके पसीने से सिंचित खेतों से विदेशी खजाने भरते रहे। अकालों ने मेरी हड्डियों को कुतर दिया और दुखों के निशान इतिहास के पन्नों में छोड़ गए। इस लूट के पैमाने को बढ़ाने के लिए अंग्रेजों ने रेल बिछाई। इस्पात की ये नसें, शोषण के बावजूद भी धड़कती रहीं और मेरे भीतर आज़ादी के आंदोलनों और क्रांतियों को रक्त पहुंचाती रही।

राजनीतिक रूप से, स्थिति बदलने लगी। 1857 में, सिपाही विद्रोह का एक तूफ़ान, जो तेज़ी से आया और शांत हो गया, लेकिन अविस्मरणीय बना रहा। यह एक लंबे समय से सुलगती आग की पहली चिंगारी बना। 1885 तक, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना झंडा फहराया, एक नन्ही आवाज़ जो आगे चलकर एक गरजता हुआ जनगीत बन गया। दादाभाई नौरोजी जैसे नेताओं ने आर्थिक बर्बादी का पर्दाफ़ाश किया, जबकि गोपाल कृष्ण गोखले ने प्रतिरोध के बीज बोए। फिर 1915 में दक्षिण अफ्रीका से एक शांत तूफ़ान मोहनदास करमचंद गांधी के रूप में आया, जिसने 1930 में दांडी यात्रा की। यह कोई साधारण पदयात्रा नहीं थी, बल्कि विरोध की तीर्थयात्रा थी, नमक का प्रत्येक कण मेरी अदम्य इच्छाशक्ति का

प्रतीक था। उन्होंने घोषणा की, “इसके साथ, मैं ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला रहा हूँ।” और इस प्रकार, ‘वंदे मातरम्’ के नारों से प्रेरित होकर, स्वतंत्रता की गाड़ी ने हुंकार भरी।

स्वतंत्रता : एक नए युग की शुरुआत

15 अगस्त, 1947 की रात, मैंने जीवन और आज़ादी के लिए जागरण किया, जब जवाहरलाल नेहरू की आवाज़ ने सन्नाटे को चीरते हुए कहा, “जब दुनिया सो रही होगी, भारत आज़ादी के लिए जाग रहा होगा।” लेकिन हवा में विभाजन की विभीषिका के दर्द की राख घुली हुई थी। एक ऐसा ज़ख्म जिसने मेरी आत्मा को चीर दिया, फिर भी मेरे संकल्प को तोड़ नहीं सका। सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रबल नेतृत्व को अपना वास्तुकार मानते हुए, मैंने 500 से अधिक रियासतों को एक ही ताने-बाने में पिरोया, जो कूटनीति की कसौटी पर एकता का प्रतीक था।

डॉ. बी.आर. आंबेडकर जैसे प्रतिभाशाली विद्वान ने एक पवित्र पुस्तक की रचना की, जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को मार्गदर्शक बनाया गया। कानूनन और सामाजिक रूप से अब मैंने अस्पृश्यता की बेड़ियाँ तोड़ दीं और दलितों को उत्थान के लिए सकारात्मक सहारा देकर अपने स्वर्णिम भविष्य की नींव रखी। बसंत के फूलों की तरह विद्यालय और विश्वविद्यालय खिल उठे। आईआईटी और आईआईएम जैसे संस्थान ज्ञान के प्रकाश स्तंभ बन गए। स्वास्थ्य सेवा मेरे गाँवों तक पहुँची और सदियों से मुझे परेशान करने वाली बीमारियों के साये से निज़ात दिलाने लगी।

आर्थिक रूप से, मैंने आत्मनिर्भरता का रास्ता चुना, एक मिश्रित अर्थव्यवस्था जो राज्य और बाज़ार के बीच संतुलन बनाए रखती है। एम. एस. स्वामीनाथन जैसे दूरदर्शी लोगों के नेतृत्व में 1960 और 70 के दशक की हरित क्रांति ने मेरे खेतों को सुनहरे अन्न भंडारों में बदल दिया, मेरे किसान गर्व से लहलहाते हुए खड़े हो गए। इस्पात संयंत्र और बाँध बने, नेहरू के “आधुनिक भारत के मंदिर” उनकी गुनगुनाहट प्रगति का गान थी।

राजनीतिक रूप से, मेरी अग्नि परीक्षा हुई। 1947, 1965 और 1971 में पाकिस्तान के साथ और 1962 में चीन के साथ युद्धों ने मेरे साहस का परिचय लिया। फिर 1975 के आपातकाल ने एक काला पन्ना मेरे इतिहास के अध्याय में जोड़ा, जिसने इस मत को और प्रबल किया कि लोकतंत्र की ज्वाला रक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए। इन अग्नि परीक्षाओं से गुज़रते हुए, मैं फिर आगे बढ़ा, मेरी संस्थाएँ चोटिल तो थीं, लेकिन अखंड थीं, मेरी लोकतांत्रिक भावना दृढ़ थी।

उदारीकरण और उससे आगे : परिवर्तन के पंखों पर उड़ान

वर्ष 1991 एक महत्वपूर्ण मोड़ था, एक ऐसा क्षण जब मैं एक खाई के किनारे पर खड़ा था और मैंने उड़ान भरने का फैसला किया। आर्थिक संकट मँडरा रहा था, लेकिन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में, मैंने दुनिया के लिए निवेश के द्वार खोल दिए। उदारीकरण मेरे पंखों के नीचे की हवा की तरह था, जिसने मेरी अर्थव्यवस्था को अविश्वसनीय ऊँचाइयों तक पहुँचाया। आईटी क्रांति तेज़ी से बढ़ी, इंफोसिस और विप्रो जैसी कंपनियों ने नवाचार की गाथा लिखी। बैंगलोर की सिलिकॉन वैली से लेकर वैश्विक बोर्डरूम तक, मेरे तकनीक-प्रेमी बेटे-बेटियाँ एक नए भारत के राजदूत बन गए।

मेरा भोगोलिक परिवेश उफान पर आई नदी की तरह सिंचित हो गया। शहर उमड़ पड़े, उनके क्षितिज आसमान को चीरते हुए गगनचुंबी इमारतों का निर्माण करने लगे। एक जीवंत मध्यवर्ग तकनीकी रंगों में सपने बुनने लगा। शिक्षा और तकनीक ने प्राचीन विभाजनों को मिटा दिया, शिक्षा का अधिकार अधिनियम और डिजिटल इंडिया जैसी पहलों ने समानता के मार्ग प्रशस्त किए। मेरी संस्कृति भी वैश्विक मंच पर छा गई। योग की शांति, बॉलीवुड का उल्लास और मेरे व्यंजनों का मसाला एक सौम्य शक्ति का जादू बिखेर रहा था।

राजनीतिक रूप से, मैंने गठबंधन की कला में महारत हासिल कर ली है, विविधता और स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखा है। वैश्विक मंचों पर स्थिरता और समानता की वकालत करते हुए मेरी आवाज़ गूंजती रही। 2014 में, मेरे मंगल मिशन, मंगलयान ने

मेरा नाम सितारों में अंकित कर दिया, जो मेरे वैज्ञानिक साहस का प्रमाण है, जिसे मैंने पहले ही प्रयास में हासिल कर लिया, एक बेजोड़ उपलब्धि।

अब, अमृतकाल में, मैं एक स्वर्णिम युग की दहलीज पर खड़ा हूँ, एक कायाकल्प का काल जो 2047 में मेरी स्वतंत्रता की शताब्दी की घोषणा करेगा। 'मेक इन इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' और 'स्किल इंडिया' के साथ, मैं अपने युवाओं के जोश और अपने संसाधनों की संपदा का उपयोग कर रहा हूँ, और न केवल शक्ति में, बल्कि बुद्धिमत्ता से भी विश्व का नेतृत्व करने के लिए तैयार हूँ।

मेरी यात्रा: प्रतिबिंब और क्षितिज

इस युग का सूर्योदय होते ही, मैं उस पथ पर दृष्टि डालने के लिए रुकता हूँ जिस पर मैं चला हूँ। उपनिवेशवाद की लंबी, अँधेरी रात से, जहाँ आशा एक टिमटिमाता तारा मात्र थी, स्वतंत्रता की भोर तक, जहाँ संभावनाएँ आकाश को रंग देती थीं, मेरी यात्रा चमत्कारों की एक पच्चीकारी रही है। विभाजन की पीड़ा, राष्ट्रवाद के परीक्षण, प्रगति की विजय-प्रत्येक अध्याय मेरे लोगों के पसीने और सपनों से बुने गए ताने-बाने का एक धागा हैं।

मेरी कहानी लचीलेपन की है, एक ऐसी धरती जहाँ इतिहास और नियति एक शाश्वत आलिंगन में नृत्य करते हैं। टैगोर की कविताओं से लेकर, जिन्होंने मेरी आत्मा को झकझोर दिया, कलाम के उस दृष्टिकोण तक जिसने मेरे रॉकेटों को प्रक्षेपित किया, गांधी के नमक से लेकर अंबानी के उद्यम तक, मैं स्वरों का एक स्वर-संगीत हूँ, विरोधाभासों का एक समूह हूँ। फिर भी, आगे का रास्ता लंबा है, उसके मोड़ अनजान हैं। अपने अतीत के सबक को अपना दिशासूचक और अपने अरबों दिलों की आकांक्षाओं को अपनी वायु बनाकर, मैं आगे बढ़ता हूँ- अनंत, निरंतर विकसित होता हुआ, एक ऐसा यात्री जिसकी यात्रा का कोई अंत नहीं है।

क्योंकि मैं भारत हूँ, जहाँ अतीत एक शिक्षक है, वर्तमान एक कैनवास है, और भविष्य असीम स्वप्नों का क्षितिज है। इस अमृतकाल में, मैं केवल एक राष्ट्र नहीं हूँ, मैं एक प्रतिज्ञा हूँ, एक प्रकाशस्तंभ हूँ, उस अदम्य साहस का प्रमाण हूँ जो न केवल झुकने से इनकार करता है, बल्कि बार-बार उठने का साहस करता है।

बचपन

बचपन ही बेस्ट था, बेफिक्री का सारा जहां,
ना चिंता कल की थी, ना डर किसी का वहाँ।

मिट्टी में खेलना, बारिश में भीग जाना,
छोटे-छोटे ख्वाबों में, दुनिया को देख आना।
ना पैसे की भूख, ना नाम की चाह,
एक चॉकलेट में बंट जाती थी सारी राह।

कभी गुड्डे-गुड़ियों की बारात सजती,
तो कभी कंचों में दुनिया मचलती।
ना दिखावा था, ना कोई अभिमान,
हर दिल में बस सच्चाई की पहचान।

माँ की ममता, पापा का प्यार,
दादी की कहानी, वो मधुर फुहार।
वो छत पर सोना, तारे गिनना,
बिना वजह हँसना, बिना वजह रोना।

अब तो हर चीज में हिसाब रखना पड़ता है,
हर मुस्कान के पीछे सवाल रखना पड़ता है।
काश लौट आए वो बचपन का जहां,
जहां दिल था सच्चा और मन था महका हुआ आसमां।

बचपन ही अच्छा था, सादगी की मिसाल,
ना कोई झूठ, ना कोई चाल।

प्रीति कुमारी
बोकारो
आंचलिक कार्यालय

तारा देवी हाइक

सुलेखा शर्मा
आंचलिक कार्यालय
चंडीगढ़

हिमालय की हरी-भरी पहाड़ियों में स्थित 'तारा देवी मंदिर' एक अद्‌भुत आध्यात्मिक एवं पर्वतीय पर्यटन स्थल है। यह प्राचीन मंदिर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में एक पहाड़ी पर 1950 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 250 वर्ष पूर्व राजा भूपेंद्र सेन के पुत्र राजा बलबीर सेन द्वारा एक पहाड़ की चोटी पर करवाया गया था। मुझे साथियों के एक समूह ने तारा देवी हाइक पर चलने के लिए आमंत्रित किया, तो मैंने भी यहाँ जाने का मन बनाया। जून के महीने में हम सब ने सुबह लगभग 7.00 बजे चंडीगढ़ से हिमाचल प्रदेश के लिए अपनी यात्रा शुरु की। जैसे-जैसे हम हिमाचल प्रदेश की ओर बढ़े, मौसम करवट बदलने लगा और ठंड की हल्की-हल्की अनुभूति, हवाओं में ताजगी की महक और चीड़-देवदार के सीधे खड़े पेड़ों ने देवभूमि हिमाचल में हमारा स्वागत किया।

रास्ते में कुछ देर नाश्ते के लिए रुकने के बाद हम दोपहर 12 बजे तारा देवी बेस कैंप तक पहुंचे। वहां पहुँचने पर, हाइक के आयोजकों द्वारा हमें हाइक के बारे में आवश्यक जानकारी दी गई, जैसे कि साथ रहें, जंगली पौधों से दूर रहें और प्रकृति का आदर करें। हाइक लगभग 7 किलोमीटर की थी। पदयात्रा के दौरान सभी को एक साथ चलते हुए, एक-दूसरे का ध्यान रखना था। जंगली पौधों को छूने से माना किया गया क्योंकि वे जहरीले हो सकते हैं और हमें नुकसान पहुंचा सकते हैं। इस प्रकार सभी ने दोपहर करीब 12:30 बजे पदयात्रा शुरू की।

अब हम पहाड़ी रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। घना जंगल, सूखे पत्तों से ढका संकरा मार्ग, और पक्षियों की मधुर स्वर-लहरियाँ मानो किसी दिव्य लोक में सैर करने की कल्पना साकार हो रही थी। इतना शांत और प्राकृतिक रूप से सुंदर माहौल आधुनिक शहरी जीवन में दुर्लभ है। ऊंचाई के रास्ते से शिमला के सुंदर दृश्य दिखाई दे रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे बादलों की झीनी चादर से स्वर्गलोक झांक रहा हो।

रास्ते में कुछ ऊँचाई पर पहुँच कर 20 मिनट का एक योग एवं ध्यान का सत्र रखा गया। आसमान में बादल होने के कारण बारिश की हल्की फुहार शुरू हो गई, पहाड़ी पर इतनी ऊंचाई पर ऐसा अनुभव बेहद मनमोहक था। चलते-चलते हम लगभग 3 बजे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे। वहाँ से 360 डिग्री में शिमला का दृश्य देखकर ऐसा लगा जैसे पहाड़ों ने शहर को अपनी बाहों में भर रखा हो। मंदिर की लकड़ी से बनी संरचना और देवी माँ की अष्टधातु से बनी भव्य मूर्ति, मंदिर के गर्भगृह में प्रविष्ट होते ही आध्यात्म से भर देती है। पास में स्थित शिव एवं दुर्गा जी के छोटे मंदिर इस प्रांगण को और अधिक दिव्यता प्रदान करते हैं।

वहाँ सभी के लिए हिमाचली धाम की व्यवस्था भी है। लंगर सप्ताह में कुछ दिन, शाम 5 बजे तक उपलब्ध होता है। लंगर को प्रसाद के रूप में प्रार्थना और श्लोकों का उच्चारण करते हुए बनाया जाता है। धाम करना अपने आप में ऊर्जापूर्ण, स्वादिष्ट एवं आध्यात्मिक होता है। धाम के बाद हमने कुछ फोटो क्लिक कीं। इसी बीच कुछ पल ऐसे आए, जब हम चारों ओर से बादलों से घिर गए थे और आसपास कुछ भी नजर नहीं आ रहा था, साथ ही बहुत ठंड लग रही थी। लेकिन कुछ देर में बादल छंट गए और मौसम साफ हो गया। फिर हमने मंदिर से तारा देवी बेस तक वापसी के लिए अपनी यात्रा शुरू की और सूर्यास्त के समय करीब 7:30 बजे वहां पहुंच गए। बेस पर पहुंचने के बाद हम अपने ट्रैवलर्स में सवार हो गए। शिमला से चंडीगढ़ की ओर आते हुए, ढलता हुआ सूरज बेहद सुंदर लग रहा था।

मसानज़ोर : वादियों में विदाई कार्यक्रम की अविस्मरणीय यात्रा

सोमनाथ वर्मा
अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय
रांची
रांची अंचल

वर्ष 2022 में भागलपुर अंचल में तैनाती के दौरान हमने सेवानिवृत्त होने जा रहे एक सहकर्मी के सम्मान में एक विशेष यात्रा का कार्यक्रम बनाया। यह केवल एक यात्रा नहीं थी, बल्कि एक साझा स्मृति थी, एक टीम के जज़्बे और आत्मीय रिश्तों का साझा उत्सव था। इस यात्रा में हमारी मंज़िल थी, मसानज़ोर डैम! प्रकृति की अद्भुत छटाओं से भरपूर यह पिकनिक स्थल झारखंड के दुमका जिले में शहर से 31 किलोमीटर दूर स्थित है। मयूराक्षी नदी पर यह बांध विद्युत उत्पादन के लिए बनाया गया है। नदी, पानी का विशाल भंडार, पहाड़ियां, जंगल और हरी-भरी वादियों ने इसे पर्यटन का एक लोकप्रिय केंद्र बना दिया है।

हमने यात्रा की शुरुआत सुबह पौने नौ बजे की, भागलपुर से बस में बैठकर निकलते ही गीत, संगीत और हँसी का अनवरत सिलसिला शुरू हुआ। महिला सहकर्मियों की मधुर आवाज़ों और सहकर्मियों की चुटकियों ने माहौल को उत्सव में बदल दिया। सहकर्मी नेकी राम जी, जिनकी सेवानिवृत्ति अगले ही दिन थी, वो इस यात्रा के भावनात्मक केंद्र थे और हर क्षण को अपनी आँखों में सजो रहे थे। यात्रियों में उमंग की लहर देख कर बस चालक भी उत्साहित थे। बस जैसे-जैसे शहर से बाहर निकल रही थी, सभी के भीतर का टैलेंट बाहर आने लगा; नृत्य, गीत, गजल और शायरी से माहौल मनोरंजक हो चुका था। डीजे से धुन निकलने की देर थी कि सबके पांव थिरकने लगे। इस बीच गाड़ी जगदीशपुर से रजौन की तरफ आगे बढ़ चुकी थी। जगदीशपुर और रजौन की प्रसिद्ध और सुगंधित 'कतरनी धान' को जीआई टैग प्राप्त है। अंचल के हमारे शीर्ष नेतृत्व और अनेक स्टाफ के परिजनों के साथ होने से यात्रा का आनंद और अधिक हो गया था। सुबह 10 बजे हम बौंसी में पहुंचे और स्वादिष्ट नाश्ता किया, यहाँ के मंदार पर्वत का समुद्र मंथन में पौराणिक उल्लेख है, जो हमें रास्ते में विरासत की झलक दे गया। रास्ते में जैसे ही बस कुछ क्षणों के लिए रुकी तो एक सूट-बूट वाले सज्जन बस में चढ़ गए। लेकिन जितनी तेज़ी से वो चढ़े, उतनी ही तेजी से उतर भी गए। जाते-जाते बोले- बस रिजर्व है न, इसलिए आप लोग इतने खुश लग रहे हैं; उनके यह कहते ही हमारी हंसी फूट पड़ी।

बौसी से आगे झारखंड की सीमा में प्रवेश करते ही चौड़ी सड़कों ने हमारा स्वागत किया। वहां से हम बासुकीनाथ की तरफ मुड़ गए। बासुकीनाथ में बाबा बासुकीनाथ का भव्य मंदिर है। श्रावण मास में कांवरिया देवघर में जल अर्पण करने के बाद यहाँ जलार्पण के लिए अवश्य आते हैं। बासुकीनाथ के बाद गाडी आगे बढ़ गयी। कई गांवों को पार करते हुए हम आगे बढ़ रहे थे, स्थानीय लोग अपनी दिनचर्या में व्यस्त थे। बच्चे शरारत के मूड में थे, लेकिन चलती बस में उन्हें मौका नहीं मिल पा रहा था। रास्ते में फूलो झानो मेडिकल कॉलेज जैसी निर्माणाधीन संरचनाएं इस क्षेत्र के विकासरत होने की गवाही दे रही थी। सड़क के दोनों ओर जंगल, पहाड़ और नल-नाले थे, जो सभी का मन मोह रहे थे। इन प्राकृतिक दृश्यों को सभी अपने कैमरे में कैद करने की कोशिश कर रहे थे। मैंने भी अपनी स्मृतियों में इन्हें संजोने की कोशिश की। दोपहर करीब 01:00 बजे होटल कृष्णा गार्डन पहुँचने के बाद स्वादिष्ट भोजन और आराम करके, पूरी टीम फिर से तरोताज़ा हो गई। सभी के स्टेटस अपडेट की झड़ी ने यह साबित कर दिया कि उत्साह में कोई कमी नहीं है।

साढ़े तीन बजे हम डैम पहुंचे। वहाँ की पहली झलक में ही मन मंत्रमुग्ध हो गया। चारों ओर पहाड़, पानी और जंगल! कुछ साथी डैम की तराई की तरफ रवाना हुए, बाकी सभी बोटिंग के

लिए प्रस्थान कर गए। बोटिंग रोमांच से भरपूर रही। जल की धाराएँ चीरती हुई बोट, सहकर्मियों की बाल-सी चंचलता और फोटोशूट का उत्साह। पानी के बीच 'फिल्मी' करतब और ठंडी लहरों ने हर किसी को स्फूर्ति से भर दिया। बोट से उतरकर हम फिर से नजारों को कैमरे में कैद करने लगे।

हम सूरज ढलने का इंतजार कर रहे थे। बताते हैं कि यहां से डूबता सूरज काफी खूबसूरत दिखता है। हम उसी इंतजार में थे। सूरज जैसे-जैसे पहाड़ों के पीछे जा रहा था वैसे वैसे पूरा वातावरण शीतल और मनमोहक होता जा रहा था। पहाड़ों के पीछे लालिमा छा रही थी। सूरज का आकार और रंग मानो स्त्री के माथे की लाल बिंदी जैसे हो गया हो। सूरज की विदाई में लालिमा से रंगा आकाश मानो काव्यबोध हो! ऐसे सुंदर शीतल साँझ-समय तराई में शिलाओं पर बैठकर पानी की ठंडक का एहसास, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम प्रकृति से एकाकार हो रहे हों, मानो आत्मा एक नए आयाम में प्रविष्ट हो रही थी।

वहां ऊपर चढ़ने पर एक मैदान था जहां कई दुकानें और पर्यटक बसें लगी हुई थीं। वातावरण पिक्निकमय था। कुछ लोग भोजन बनाने में व्यस्त थे, तो कोई भोजन का लुत्फ उठाने में। और आगे जाने पर हम स्थानीय पुलिस चौकी के पास पहुंच गए। हम लगातार सड़क पर सेल्फी ले रहे थे। कुछ देर बाद हम आगे ऊपर की तरफ बढ़ गए। ऊपर पहाड़ी पर एक डाक बंगला दिखा। ऐसा लगा कि हम यहीं रुक जाएं और प्रकृति का भरपूर आनंद लें। लेकिन कदम आगे बढ़ने में व्यस्त थे। हम आगे बढ़ते गए और गेट नंबर एक के पास पहुंच गए। शाम के छह बज रहे थे, हम डैम से विदा लेकर होटल लौटे। चाय की चुस्कियों के साथ बातों का दौर फिर शुरू हुआ। रात नौ बजे हंसडीहा में सोनपापड़ी ने स्वाद और स्मृति दोनों को जोड़ दिया। भागलपुर लौटते समय एक अजीब-सी बिछुड़न महसूस हुई। लेकिन यही तो जीवन की सच्चाई है, कुछ छूटता है तो कुछ जुड़ता भी है।

आज भी मसानज़ोर की वह यात्रा मेरे मन की वादियों में सजीव है। रास्ते अब बेहतर हैं, मेडिकल कॉलेज बन चुका है, लेकिन उस दिन का उत्साह, वह हँसी, वह उमंग सब कुछ अब भी वैसा ही ताज़ा है। एक बैंकर के जीवन की यही सच्चाई है कि यात्राएं जारी रहती हैं और सहयात्री बदलते रहते हैं।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

इतने वर्षों बाद है छलका, उस पीड़ा से भरा कलश,
याद आ गई कुछ नेताओं की पुनः पुरानी वही हवस,
तुच्छ स्वार्थों की बलि वेदी पर राष्ट्र प्रेम था जला दिया,
लोभ, मद, मोह, द्रोह में एकता का आंचल गला दिया।

भारत मां की सुर्ख बिंदी को, स्याह बनाया गद्दारों ने,
बहन बेटी के सम्मान को, खूब बहाया तलवारों ने,
राखी सिंदूर बहे लहू में, कुछ लोगों का श्रृंगार हुआ,
आधे अधूरे रिश्ते लेकर, भीषण नरसंहार हुआ।

पैरों में छाले, मुंह पर ताले, कैसा भयावह दृश्य होगा,
अपने अपनों को खोकर, रुदन विषाद भी भृश होगा,
अस्मिता, जीवन, धन, जमीनें छिनी, स्वाभिमान गया,
अश्रुपूर्ण विकट बेला में, मान गया जयगान गया।

खिंची रेखाएं युद्ध हुआ, भाग्य भारत पर क्रुद्ध हुआ,
मारो, काटो, भागो, मत जाओ, चीख पुकारें बहुत हुईं,
सीमा का सब झगड़ा ठहरा, सीमाएं सब लांघी गई,
खंडित हुआ अखंड भारत, पत्थरों की आखें भी नम हुई।

ऐसा वीभत्स दर्शन कि जैसे कलयुग की काली काल रात,
वो मारे मैं बच जाऊं, तू डाल-डाल मैं पात-पात।
स्मृतियों के झरोखों से झांके और आज बस ये प्रण लें,
कभी नहीं बंटने देंगे फिर किसी भी कारण से गण ये।

भारत का गौरव रखेंगे, अपना सर कटे, कट जाए,
झंझावात तूफान कोई हो, अपना देश न फिर बंट पाएँ,
माना यह दिवस सदा ही वेदना की याद दिलाएगा,
किंतु इसी वेदना का संकल्प देश को,
सर्वोच्च शिखर पर ले जाएगा।
जय हिन्द!

निशि अरोड़ा
पत्नी श्री पवन कुमार
उप आंचलिक प्रबंधक
दिल्ली एनसीआर अंचल

राजभाषा सम्मेलन सह

बैंक ऑफ इंडिया के राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में दिनांक 24.06.2025 से 25.06.2025 तक दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन-सह-समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। उक्त सम्मेलन तथा समीक्षा बैठक में बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों ने सहभागिता की। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री राजीव मिश्रा उपस्थित थे। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार की ओर से केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक ले. कर्नल रामनरेश शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर एफ़जीएम कार्यालय नई दिल्ली के महाप्रबंधक श्री लोकेश कृष्ण एवं नई दिल्ली के आंचलिक प्रबंधक श्री अमित कुमार ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। सम्मेलन के पहले दिन दिनांक 24.06.2025 को मंचासीन पदाधिकारियों ने बैंक द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता के प्रमुख निबंधों के संकलन 'बैंक, भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता' का विमोचन किया। साथ ही, बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'तारांगण' एवं 'वार्षिक कार्ययोजना 2025-26' का भी विमोचन किया गया। इस दौरान बैंक में वार्षिक 'राजभाषा शील्ड योजना' के अंतर्गत 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र के अंचलों को पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष से बैंक के संयोजन में कार्यरत 15 नराकासों के लिए 'स्टार नराकास राजभाषा शील्ड योजना' भी आरंभ की गई तथा विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस दौरान अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। 24.06.2025 को

समीक्षा बैठक

द्वितीय सत्र वित्तीय सेवाएँ विभाग से पधारे विशेष अतिथि उप निदेशक (राजभाषा) श्री धर्मबीर जी के सान्निध्य में हुआ। इस सत्र में बैंक की पत्रिकाओं के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों को पुरस्कृत किया गया साथ ही अंचलों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार किए गए संदर्भ साहित्य का विमोचन किया गया। श्री धर्मबीर जी ने वित्तीय सेवाओं में राजभाषा कार्यान्वयन के महत्व एवं संसदीय समिति की प्रश्नावली संबंधी ध्यान देने योग्य बातों के बारे में प्रतिभागियों को बताया। सम्मेलन में इस सत्र में निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं ने शानदार प्रस्तुतियाँ दी गई। सम्मेलन के दूसरे दिन 25.06.2025 को प्रधान कार्यालय से उप महाप्रबंधक एवं स्टार लाइट की प्रभारी श्रीमती राजलक्ष्मी पाढी ने 'स्टार लाइट' के माध्यम से मानव संसाधन में हो रहे परिवर्तनों के बारे में विस्तार से चर्चा की एवं प्रतिभागियों के प्रश्नों का निराकरण किया। 25.06.2025 को दूसरे सत्र में लाइफ कोच सुश्री मोना सिंह ने जीवन के अहम पहलुओं के बारे में सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया तथा तनाव प्रबंधन से संबन्धित चर्चा की गई। सम्मेलन के अंतिम सत्र में अंचलों के राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गई।

मुन्नार : ईश्वरीय अनुभूति

हर्षदकुमार पी. दमानिया
सेवानिवृत्त
स्टाफ अधिकारी

पश्चिमी घाट की हरी-भरी पहाड़ियों में बसा मुन्नार एक ऐसा हिल स्टेशन है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांति से आगंतुकों का दिल जीत लेता है। केरल के इडुक्की जिले में समुद्र तल से करीब 1,600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह स्थल चाय के बागानों, धुंध से ढकी घाटियों और औपनिवेशिक विरासत के आकर्षण का अनूठा संगम है। मुन्नार की यात्रा शुरू होते ही गाड़ी घुमावदार सड़कों पर चलते हुए रोमांचकारी प्राकृतिक दृश्यों से परिचय करवाती है। दोनों तरफ फैले चाय के हरे-भरे बागान और हवा में ठंडक का अहसास कामकाजी शहरी जीवन की थकान को जड़ से मिटा देता है। रास्ते में धुंध भरी पहाड़ियाँ और दूर तक फैली हरियाली को देखकर मन में एक अजीब सी शांति महसूस होती है। ऊँचाई पर चढ़ते-चढ़ते हवा में ताज़गी बढ़ती है और दूर बहती नदियों की आवाज़ कानों में गूँजने लगती है। मुन्नार का नाम ही तीन नदियों मुदिरापुझा, नल्लाथन्नी और कुंडाला, के संगम से प्रेरित है, और यहाँ पहुँचते ही इसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

मुन्नार पहुँचते ही सबसे पहले मैंने वहाँ की मशहूर चाय का स्वाद लिया। एक छोटे से ढाबे पर बैठकर, चाय की चुस्कियों के साथ ठंडी हवा का आनंद अपने आप में एक अनोखा अनुभव है। चाय की खुशबू और उसका स्वाद ऐसा था कि लगा जैसे यहाँ की मिट्टी और हवा का सार उसमें घुल गया हो। स्थानीय लोगों की गर्मजोशी ने चाय की मिठास को और अधिक बढ़ा दिया। स्थानीय लोग मुस्कुराते हुए हमें वहाँ की बातें बताने लगे कि कैसे यहाँ कभी ब्रिटिश लोग गर्मियों में समय बिताने आया करते थे। आइए, यहाँ की कुछ खास जगहों की सैर करते हैं:

इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान: प्रकृति का आलिंगन

मुन्नार से 15 किमी दूर इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान पहुँचते ही आपको प्रकृति अपनी सर्वोत्तम वेशभूषा में दिखाई देगी। बस में यात्रा के दौरान खिड़की से दिखती धुंध में ढकी चोटियाँ और हरे-भरे जंगल मंत्रमुग्ध कर देंगे। यहाँ नीलगिरि को देखना मेरे लिए बहुत खास अनुभव रहा, पहाड़ी पर बकरियाँ घास पर चर रही थीं, और उनकी मासूमियत ने मेरा ध्यान खींच लिया। ऊँचाई पर खड़े होकर जब मैंने नीचे की घाटियों को देखा, तो लगा जैसे मैं बादलों के बीच में हूँ। यदि आप वहाँ जाते हैं तो टिकट ऑनलाइन बुक करके ही जाएँ, वरना लंबी लाइन में खड़े होना पड़ सकता है।

आनामुड़ी चोटी: आसमान को चूमते कदम

आनामुड़ी दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है, हालांकि आनामुड़ी तक का ट्रेक मेरे लिए एक चुनौती थी, लेकिन मेरा परिश्रम, पारिश्रमिक के सामने बहुत छोटा था। 2,695 मीटर की ऊँचाई पर पहुँचकर जब मैंने चारों तरफ चाय के बागानों और धुंध से ढकी घाटियों को देखा, तो थकान काफ़ूर हो गई। ठंडी हवा और दूर तक फैला प्राकृतिक नज़ारा ऐसा था मानो बादलों के ऊपर दिव्यलोक के दर्शन करने का दुर्लभ अवसर मिला हो।

माट्टूपेट्टी बांध: पानी पर रोमांच

माट्टूपेट्टी बांध पहुँचकर स्पीडबोट की सवारी करना भी बहुत आनंददायक होता है, पहाड़ियों की तलहटी में पानी पर हवा में दौड़ना एक विलक्षण अनुभव है। माट्टूपेट्टी बांध पर झील के किनारे बैठकर मैंने कुछ देर शांति का आनंद लिया और दूर तक फैले जंगलों को निहारा। यहाँ डेयरी फार्म देखना भी मजेदार था; सादगी

से भरा ग्रामीण परिवेश यहाँ की खूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था। यहाँ सुबह जल्दी जाना उचित है ताकि भीड़ से बचा जा सके और फोटो खींचने के लिए सही रोशनी मिल सके।

पोथामेडु व्यू पॉइंट: साँसें थाम देने वाला दृश्य

पोथामेडु व्यू पॉइंट पहुँचकर मैंने जो देखा, उसे शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। चाय के बागानों और पहाड़ियों का विशाल दृश्य, ठंडी हवाओं के साथ, ऐसा था जैसे प्रकृति ने अपना सबसे खूबसूरत रूप मेरे सामने रख दिया हो। यहाँ खड़े होकर मैंने अपने कैमरे में प्राकृतिक सौन्दर्य के कुछ लम्हे कैद किए।

आट्टुकाड जलप्रपात: प्रकृति की संगीतमयी धुन

आट्टुकाड जलप्रपात तक पहुँचते ही पानी की गड़गड़ाहट ने मेरा स्वागत किया। हरी-भरी पहाड़ियों के बीच से बहता यह झरना मानो प्रकृति का संगीत बजा रहा था। मैंने यहाँ कुछ देर बैठकर इस सुकून को महसूस किया। मानसून के दौरान यहाँ का नज़ारा और भी शानदार होता है।

मुन्नार की संस्कृति और लोग

मुन्नार की खूबसूरती सिर्फ इसके नज़ारों तक सीमित नहीं है। यहाँ के लोगों की सादगी और मेहमाननवाज़ी ने मुझे बहुत प्रभावित किया। चाय संग्रहालय में जाकर मैंने चाय बनाने की कला को करीब से देखा और जाना कि कैसे यहाँ की मिट्टी और मेहनत इस स्वाद को खास बनाती है। ताज़ी चाय का स्वाद लेते हुए, वहाँ किस्सों और किंवदंतियों को जानने-सुनने का लुत्फ इस जगह के अनुभव को और भी जीवंत बना देता है। मुन्नार में मुझे सिर्फ प्राकृतिक नज़ारे नहीं, बल्कि ताजगी, स्फूर्ति और ठहराव का एक मिश्रित एहसास भी मिला। सुबह कुंडला झील पर सूर्योदय देखना हो या टॉप स्टेशन से बादलों के ऊपर खड़े होने का रोमांच, हर पल यहाँ खास था। यहाँ की शांति और प्रकृति की गोद में बिताए लम्हों ने मुझे अपने भीतर झाँकने का अवसर दिया।

मुन्नार एक ऐसी जगह है जहां हर यात्री के लिए कुछ न कुछ खास अनुभव उपलब्ध है। रोमांच, शांति या रोमांस। मेरी इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि प्रकृति के पास कितना कुछ है हमें देने के लिए। तो अगर आप कहीं घूमने का मन बना रहे हैं, तो मुन्नार को अपनी सूची में ज़रूर शामिल करें। यह हिल स्टेशन सचमुच "ईश्वर के अपने देश" का दिल है। अपना बैग पैक कीजिए और इस जादुई जगह की सैर पर निकल पड़िए। मुझे यकीन है, आप खाली हाथ नहीं लौटेंगे।

स्वतंत्रता के संघर्ष में कलम का सफर

पूर्णिमा दास
वरिष्ठ प्रबंधक
एफ़जीएमओ कोलकाता

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक या सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि यह वैचारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक चेतना का भी संघर्ष था। इस संघर्ष को दिशा देने में भाषा और साहित्य का योगदान अद्वितीय रहा। साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से भारतीय समाज में स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। उन्होंने अपने लेख, कविता, उपन्यास, नाटक और पत्रकारिता के माध्यम से जनता को जागरूक किया और स्वतंत्रता आंदोलन को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। जब अंग्रेजों ने भारतीयों की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता छीनी थी, तब साहित्य और भाषा ने भारतीय जनमानस को मानसिक रूप से स्वतंत्र करने का कार्य किया। इन्होंने भारतीयों के भीतर दबे हुए आत्म-सम्मान, राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता की ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया।

भाषा किसी भी आंदोलन की आत्मा होती है। अनेक साहित्यकारों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, मराठी, गुजराती, तमिल आदि सभी भारतीय भाषाओं के लोगों के बीच राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। भाषाई अखबार, पत्रिकाएँ, कविताएँ, कहानियाँ, नाटक तथा गीत जनता तक स्वतंत्रता के संदेश पहुँचाने के प्रमुख माध्यम बने। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी सहित लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के साहित्य ने अमूल्य योगदान दिया। इन भाषाओं में लिखे गए साहित्य ने स्थानीय स्तर पर जनता के हृदय तक पहुँचकर राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बना दिया। साहित्य ने भारत की सांस्कृतिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोते हुए स्वतंत्रता संग्राम को संपूर्ण भारतवर्ष का आंदोलन बना दिया।

स्वतंत्रता संघर्ष में साहित्यकारों और लेखकों का योगदान

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख लेखक और विचारक थे । उनकी रचना 'आनंदमठ' ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम मे राष्ट्रवाद के बीज बोये । इस उपन्यास में ही पहली बार 'वन्दे मातरम्' गीत का उल्लेख हुआ, जो स्वतंत्रता संग्राम का प्रेरणास्रोत बन गया। इस गीत ने असंख्य क्रांतिकारियों के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला जलाई।

रवींद्रनाथ ठाकुर ने साहित्य और संगीत के माध्यम से भारतीय आत्मा को जाग्रत किया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के विरुद्ध आत्मनिर्भर भारत का संदेश दिया। उन्होंने अपनी रचना 'गीतांजलि' के माध्यम से न केवल आध्यात्मिक चेतना जगायी, बल्कि ``Where the mind is without fear...", जैसे पदों में उन्होंने भारत का भावी मानसिक स्वरूप रेखांकित किया। ये विचार स्वतंत्रता सेनानियों और युवाओं को भीतर से प्रेरित करते रहे।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव रखी और अपने नाटकों व लेखों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की आलोचना की। उनके साहित्य ने भारत में राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, और स्वतंत्रता की भावना को जन्म दिया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने "भारत दुर्दशा" और "अंधेर नगरी" के माध्यम से भारत की जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के खड़ी बोली काव्य के पितामह कहे जाते हैं। उन्होंने अपनी कालजयी रचना "भारत भारती" के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक बल प्रदान किया। 'भारत-भारती' काव्य रचना स्वतंत्रता संग्राम में लड़ रहे लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनी। यह एक राष्ट्रीय काव्य बना, इसमें

भारत के प्राचीन गौरव, वर्तमान दुर्दशा और भविष्य के उज्ज्वल सपनों को सुंदर काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सुभद्राकुमारी चौहान हिंदी की प्रमुख राष्ट्रीय और वीर रस की कवयित्री थीं। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले वीरों और वीरांगनाओं की गाथाओं को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी प्रसिद्ध कविता "झाँसी की रानी" भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणा स्रोतों में से एक बनी। उनकी कविता की एक पंक्ति "खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।" आज भी स्वतंत्रता संग्राम और नारी शक्ति का प्रतीक है।

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य ने आर्थिक शोषण, सामाजिक अन्याय और मानसिक दासता के विरुद्ध जो साहित्यिक संघर्ष किया, उसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वैचारिक और सामाजिक धरातल को उर्वर करने का कार्य किया। उनकी रचनाएँ जनता के मन को झकझोर कर उन्हें दासता के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करती थीं। मुंशी प्रेमचंद की "गोदान", "कफ़न" और "निर्मला" ने स्वतंत्रता संग्राम को जनसामान्य का आंदोलन बना दिया। उनका साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक और सामाजिक चेतना का स्तंभ था।

हसरत मोहानी ने उर्दू शायरी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा दिया। सय्यद हसरत मोहानी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी, समाजवादी विचारक और कवि थे। यह नारा ब्रिटिश साम्राज्य के अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बन गया।

काज़ी नज़रुल इस्लाम बंगाल के महान क्रांतिकारी कवि, गीतकार और लेखक थे, जिन्हें ''विद्रोही कवि'' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत के अन्याय के खिलाफ विद्रोह, मानवता और स्वतंत्रता का संदेश दिया। वे बंगाल के स्वतंत्रता आंदोलन और भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के प्रेरणास्रोत बने। वे कहते थे -"मैं एक साथ शंख भी हूँ और अज़ान भी।" उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से युवाओं में संघर्ष का जोश और परिवर्तन की आकांक्षा पैदा की।

प्रेस और पत्र-पत्रिकाएँ

- भारतीय भाषाओं में निकली पत्रिकाएँ: 'केसरी' और "मराठा" (बाल गंगाधर तिलक), 'हिंदू', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'संदेश', 'भारत मित्र', 'सरस्वती' आदि ने स्वतंत्रता का प्रचार-प्रसार किया।
- महात्मा गांधी का "यंग इंडिया", "हरिजन" और "नवजीवन"
- हिंदी में "सरस्वती" (भारतेंदु युग के बाद), "प्रताप" (गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा), "भारत मित्र", "अभ्युदय" आदि पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय जागरूकता फैलाई।
- इन पत्रिकाओं ने न केवल ब्रिटिश अत्याचारों का विरोध किया बल्कि लोगों को अपने अधिकारों के लिए जागरूक किया।
- गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने लेखों में समाज सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन दोनों पर बल दिया।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा।

क्रांतिकारियों का साहित्यिक योगदान

- भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी नेताओं ने "नौजवान भारत सभा" जैसे संगठनों के माध्यम से देशभक्ति की बातें लिखीं।
- चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल आदि ने अपने विचारों को पुस्तिकाओं और गुप्त पर्चों के माध्यम से फैलाया।
- अंग्रेजों के सेंसरशिप के कारण क्रांतिकारी साहित्य को गुप्त रूप से छपवाया और बाँटा जाता था। ऐसे साहित्य ने युवाओं में बलिदान की भावना जगाई।

"स्वतंत्रता के संघर्ष में कलम का सफर" केवल ऐतिहासिक गाथा नहीं है, बल्कि भाषा, संस्कृति एवं भावनात्मक चेतना का चरम है। बंकिम से प्रेमचंद, गांधीजी की पत्रिका से दिनकर की कविताओं तक, हर माध्यम ने स्वतंत्रता की लौ प्रज्ज्वलित की। यह एक ऐसा संघर्ष था जहाँ कलम ने तलवार से कहीं अधिक गहराई से लोगों के मन में आज़ादी की उत्कंठा पैदा की।

सिक्किम : प्राकृतिक सौंदर्य, आध्यात्मिकता और रोमांच से भरी यात्रा

रूमी देशवाल
राजभाषा विभाग
गांधीनगर अंचल

घूमना किसे पसंद नहीं और यदि आपको परिवार वालों के साथ प्रकृति की गोद में 12 दिन बीतने को मिल जाएँ तो बात ही क्या। ऐसा ही हुआ जब हमारा सिक्किम जाने का प्लान साकार हुआ। सिक्किम, भारत का एक छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत राज्य है, जो अपनी बर्फीली चोटियों, हरी-भरी घाटियों और बौद्ध संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। मन में छुपी वर्षों की ख्वाहिश थी कि गुरुदोंगमार झील की सुंदरता और वहाँ के मठों की शांति को स्वयं अनुभव करूँ। अब वो इच्छा पूरी होते देख मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था।

सिक्किम घूमने का सबसे सही समय मार्च से मई और अक्तूबर से नवंबर माना जाता है। बाकी पूरे वर्ष या तो बर्फबारी होती है या बरसात। पहले पर्यटकों के बीच गंगटोक, नाथूला पास, युमथांग वैली आदि ही हिट थे, लेकिन अब सोशल मीडिया की पहुँच बढ़ने के बाद पेलिंग, रवांगला, जुलुक जैसे हिडेन जेम्स को भी लोग अपनी आईटनरी में शामिल करने लगे हैं। तस्सली से पूरे राज्य की सुंदरता को देखने के लिए एक माह भी कम होगा।

हम अपने रोमांचक सफ़र की शुरुआत के लिए दिल्ली से बागडोगरा एयरपोर्ट पहुंचे। वहाँ से टैक्सी लेकर गंगटोक की ओर रवाना हुए। आप भारत के किसी भी कोने से बागडोगरा हवाईअड्डा या न्यू जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन पहुँचकर अपनी सिक्किम यात्रा शुरू कर सकते हैं। बागडोगरा एयरपोर्ट एक समान्य सा एयरपोर्ट है, जहां ज्यादा भीड़ नहीं होती। पूरे रास्ते तीस्ता नदी हमारी यात्रा की साथी बनी रही। ऊँचे-ऊँचे पहाड़, घुमावदार सड़कें और बादलों से ढकी चोटियाँ देखते ही मन प्रफुल्लित हो उठा।

पर्यटन सिक्किम की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्रोत है इसलिए राजधानी गंगटोक में होटल की भरमार है लेकिन मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि पहले से होटल बुक करना बेहतर है। 4-5 घंटे का सफ़र तय कर हम गंगटोक पहुँच गए थे। होटल में चेकइन करने के बाद कुछ देर आराम कर हम शाम को एमजी मार्ग घूमने निकल पड़े।

एमजी मार्ग गंगटोक शहर का एक प्रसिद्ध और जीवंत पैदल मार्ग है, जो शॉपिंग, खाने-पीने और घूमने-फिरने के लिए एक लोकप्रिय स्थल है। यहाँ पर दुकाने, रेस्तरां, कैफ़े और बार हैं। कुछ जाने माने रेस्तरां में से निमथो (सिक्किम और नेपाली खाने के लिए प्रसिद्ध) और ओस्म रेस्टरों एंड लाउंज में हमने वहाँ के लोकल खाने और संगीत का मजा लिया। एमजी मार्ग पर टहलते हुए जैसे ही नज़र बैंक ऑफ इंडिया की गंगटोक शाखा पर पड़ी तो दिल गदगद हो गया। यहाँ का माहौल इतना खुशनुमा था कि देर रात तक वहीं घूमे। थकान मानो खुद ही दूर हो गई।

सिक्किम को समझाते हुए गाइड ने बताया था कि उत्तरी सिक्किम में गुरुदोंगमार झील, युमथांग वैली, लाचुंग, लाचेन, ज़ीरो पॉइंट और चोपटा वैली; पूर्वी सिक्किम में गंगटोक, ज़ुलुक, रूमटेक मोनेस्ट्री, बाबा हरभजन सिंह मंदिर, नथुला पास और त्सोमगो झील; पश्चिमी सिक्किम में पेलिंग, युकसाम, भारत का पहला शीशे का

स्काइवॉक, पेमायांग्त्से मोनेस्ट्री, रबदंत्से खंडहर, दुबड़ी मोनेस्ट्री, खेचोपलरी झील, वरसेय रोडोडेंड्रोन सैनचुरी; दक्षिणी सिक्किम में नामची; समद्रूपसे मोनेस्ट्री; रावांगला ; टेमी टी गार्डन सबसे प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हैं। इसी हिसाब से गाइड ने हमारी ट्रिप प्लान की थी - शुरुआत पूर्वी सिक्किम की सुंदर घाटियों, झीलों, मठों और ऐतिहासिक स्थलों से करते हुए उत्तरी सिक्किम की बर्फीली पहाड़ियों, हरी-भरी घाटियों और झीलों की सुंदरता को मन में बसाए पश्चिमी सिक्किम में आध्यात्मिकता और रोमांच के बेहतरीन मिश्रण का लुफ्त उठाते हुए अंत में दक्षिणी सिक्किम के शांत वातावरण का आनंद लेते हुए अपनी यात्रा की समाप्ति कर वहीं से बागडोगरा के लिए रवाना हो जाएंगे।

अगले दो दिन हमने गंगटोक और आसपास की जगह एक्सप्लोर करने का मन बनाया। एन्चे मठ (मोनेस्ट्री), ताशी व्यू पॉइंट, गणेश टॉक, हनुमान टॉक देखने के बाद फ्लावर शो और बोटेनिकल गार्डेन में विभिन्न प्रकार के सुंदर सुंदर फूलों को देख मंत्रमुग्ध हो गए। रोडोडेंड्रोन के बारे में बहुत सुना था, जो यहाँ का राज्य वृक्ष है, पूरा शहर मानो रोडोडेंड्रोन फूलों से लदा हुआ था। इसके बाद कुछ खा पीकर हमने केबल कार की सवारी की। ऊपर से पूरे गंगटोक शहर को देख दिल खुश हो जाता है।

अगले दिन हमने आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का निश्चय कर नामग्यॉल तिब्बती संस्थान से दिन की शुरुआत की। गंगटोक और आसपास स्थित गोंजंग मोनेस्ट्री, रांका मोनेस्ट्री (जहां कई फिल्मों कि शूटिंग भी हुई है) और रूमटेक मोनेस्ट्री में शांति के पल बिताकर हम वापस होटल पहुंचे। रात में फिर एमजी मार्ग में घूमने से खुद को रोक नहीं पाए। लगता है, सिक्किम में मोनेस्ट्री हो या सबसे ज्यादा चहल-पहल वाला एमजी मार्ग- सब जगह अलग ही सुकून है। ऐसा लगता है कि सिक्किम की हवा में ही कुछ बात है।

क्योंकि यहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त पहले होता है, हमें गाइड ने 5 बजे तक तैयार होकर निकलने की हिदायत दी थी। इसी के चलते होटल की बालकनी में सुबह की पहली चाय पीते हुए बर्फ से ढके माउंट कंचनजंगा पर सूर्य की पहली किरणों को गिरते देखने का सौभाग्य भी मिला। सुनहरे रंग की बर्फीली चोटियाँ देखना अपने आप में एक अद्भुत एहसास है।

उत्तरी सिक्किम और पूर्वी सिक्किम के कुछ स्थलों पर जाने के लिए पर्मिट की जरूरत होती है। अत: हमने अपने गाइड को पहले ही अपनी आईडी और फोटो दे दिए थे ताकि वो समय से पर्मिट बनवा ले।

दूसरे दिन सुबह-सुबह हम 12,400 फीट की ऊँचाई पर स्थित त्सोमगो झील के लिए निकले। जब हम झील पहुँचे, तो वहाँ बर्फ जमी हुई थी और पहाड़ों की परछाई झील के नीले पानी में दिख रही थी। यह दृश्य अविस्मरणीय था! थोड़ी दूरी पर स्थित बाबा हरभजन सिंह मंदिर गए, जहाँ सैनिकों की वीरगाथा सुनकर देशभक्ति का भाव जाग उठा। फिर भारत-चीन सीमा पर स्थित ऐतिहासिक और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण नाथूला पास पर गए जो कभी प्राचीन 'सिल्क रूट' का हिस्सा हुआ करता था। हवा इतनी ठंडी थी कि हमने गर्म चाय और पकौड़े का आनंद लिया। वहाँ की बर्फीली वादियों में घूमते हुए ऐसा महसूस हुआ मानो हम किसी अलग ही दुनिया में आ गए हों।

अब अगले दिन मेरे लिए अविस्मरणीय यात्रा शुरू होने वाली थी क्योंकि हमें गुरुदोंगमार झील के लिए निकलना था। सिक्किम के ऊँचे पहाड़ों के बीच बसी हिंदू, बौद्ध और सिख धर्म के लोगों के लिए पवित्र- गुरुदोंगमार झील किसी स्वप्नलोक से कम नहीं। इसकी गहराई में हिमालय की शांति और सुंदरता समाई हुई है।

सुबह हम युमथांग वैली पहुँचे, जिसे 'फूलों की घाटी' कहा जाता है। वहाँ बर्फ से ढके पहाड़ और रंग-बिरंगे फूलों का अनोखा मेल देखकर सब मंत्रमुग्ध हो गए। यहाँ का शिंगबा रोडोडेंड्रोन सेंचुरी (अभयारण्य) रंग-बिरंगे रोडोडेंड्रोन फूलों के लिए प्रसिद्ध है। रोमांच और शांति से भरे दो दिन के बाद हम गंगटोक के लिए रवाना हुए। रात में गंगटोक रुककर हमे प्रात: काल पश्चिमी सिक्किम (पेलिंग) के लिए निकलना था।

पेलिंग पहुँचते ही एक अलग शांति का अनुभव हुआ। सबसे पहले हमने भारत के पहले शीशे के स्काइवॉक का अनुभव लिया। स्काई वॉक से विशाल बुद्ध प्रतिमा और पहाड़ों का नज़ारा अद्भुत

था। फिर पेमायांग्त्से मठ का दर्शन किया, जो सिक्किम के सबसे पुराने और सुंदर मठों में से एक है।

अगले दिन रिमबी नदी के किनारे संतरे के बाग में पिकनिक का आनंद लिया। फिर हिंदू और बौद्ध धर्म में पवित्र मानी जाने वाली खेचोपलरी झील (इच्छा पूरी करने वाली झील) के दर्शन किए। हरे-भरे जंगलों और ऊँची-ऊँची पहाड़ियों के बीच स्थित यह झील एक शांत वातावरण प्रदान करती है, जहाँ प्रकृति की अनूठी छटा देखने को मिलती है। यहाँ झील के चारों ओर आपको अनेक रंग-बिरंगे झंडे (प्रार्थना ध्वज) फहराते हुए दिखाई देंगे, जो तिब्बती बौद्ध धर्म और स्थानीय मान्यताओं से जुड़े हुए हैं। जब से यहाँ आए तब से ये रंग-बिरंगे झंडे देख रहे थे तो जिज्ञासु हो गाइड से पूछ ही लिया। उन्होने बताया कि ये झंडे आमतौर पर पाँच अलग-अलग रंगों के होते हैं, जो प्रकृति के पाँच तत्वों - आकाश (नीला), वायु (सफेद), अग्नि (लाल), जल (हरा) और पृथ्वी (पीला) – का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये तत्व जीवन संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बौद्ध धर्म में मान्यता है कि ये झंडे हवा के माध्यम से प्रार्थनाओं और सकारात्मक ऊर्जा को दूर-दूर तक फैलाते हैं। जब हवा इन झंडों को हिलाती है, तो ऐसा माना जाता है कि उन पर लिखे हुए मंत्र चारों दिशाओं में फैलते हैं और पूरे क्षेत्र में शांति और समृद्धि लाते हैं।

यात्रा के आखिरी दिन सिक्किम के इकलौते चाय बागान- टेमी टी गार्डन के दर्शन किए जहाँ विश्व प्रसिद्ध ऑर्गेनिक चाय उगाई जाती है। रिलैक्स हो, टेमी टी की खरीददारी कर हम पहुंचे रावांगला के बुद्ध पार्क जहां 130 फीट ऊँची गौतम बुद्ध की प्रतिमा और भव्य मठ है। फिर हम वापस बागडोगरा एयरपोर्ट के लिए निकले।

सिक्किम की यात्रा न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर थी, बल्कि यह एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव भी थी। यहाँ की स्वच्छता, शांत वातावरण और स्थानीय लोगों की सरलता मन को मोह लेने वाली थी। यह यात्रा जीवन भर याद रहने वाली है। अगर आपको कभी मौका मिले, तो सिक्किम ज़रूर जाएँ और इस स्वर्ग जैसी जगह का आनंद लें!

"एक मुस्कान"

एक मुस्कान क्या है? कोई राज़ नहीं,
पर हर दिल में ये छुपा साज नहीं।
कभी दर्द में भी खिल जाती है,
कभी खुशियों में भी छुप जाती है।

जब माँ थक कर भी मुस्कराए,
तो दुनिया का हर दुख मिट जाए।
जब कोई अजनबी यूं ही हँसे,
तो लगने लगे कि ये राहें कुछ कहें।

एक मुस्कान, बिना शब्दों के बोले,
दिल से दिल के मिलन का रस्ता खोले।
न कोई जुबान, न कोई बयान,
फिर भी कह जाए हर एक दास्तान।

टूटी उम्मीदों में थोड़ी - सी रौशनी,
जैसे बारिश में चुपके से आई हो चाँदनी।
एक मुस्कान, बस एक नज़ाकत,
बना दे रिश्तों में फिर से मिठास की आदत।

इसीलिए मुस्कराओ, बिन वजह भी कभी,
किसे पता, इसे देख कर जी उठे सभी।

सत्या श्रीवास्तव
अधिकारी
जबलपुर आंचलिक कार्यालय

‘भीमाशंकर’, कुदरत का करिश्माई सफर

गणेश भोकटे
संसाधन संग्रहण विभाग
प्रधान कार्यालय

सह्याद्री पर्वतमाला की गोद में हरियाली से लिपटा, कोहरे की मखमली चादर ओढ़े, भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग, एक तीर्थ मात्र नहीं, बल्कि प्रकृति और आध्यात्म का संगम स्थल है। पुणे शहर से लगभग 100 किमी और मुंबई महानगर से 223 किमी की दूरी पर स्थित यह ज्योतिर्लिंग, भोरगिरी गाँव की वादियों में विराजमान है। यहाँ की हवा में फैली नैसर्गिक ताजगी और पहाड़ों की शांति मन को भाव-विभोर कर देती है।

“चलो चलें उस राह पर,
पहाड़ों से हो गुफ्तगू जहाँ,
हर कदम पर हो नया नज़ारा,
हर साँस में हरि का वास जहां।”

भीमाशंकर मंदिर प्रांगण में कदम रखते ही “नगाड़ा शैली” की वास्तुकला मन मोह लेती है। प्राचीन और नवीन कला का यह सुंदर समन्वय, विश्वकर्मा शिल्पियों की अद्वितीय कुशलता का प्रमाण है। मुख्य द्वार पर लटकती अनूठी घंटी! यहाँ की सांस्कृतिक समरसता की मूक कहानी कहती है। यहाँ हर पत्थर, हर नक्काशी में सदियों की आराधना की गूँज सुनाई देती है। प्रातःकाल की आरती में घंटियों की ध्वनि और शाम की शांति में जलते दीपों की रोशनी, दोनों का अपना अलग ही माहात्म्य है।

कहते हैं, यहाँ की भीमा नदी भगवान शिव और दानव त्रिपुरासुर के युद्ध से प्रकट हुई थी। इसी पवित्र भूमि पर प्रकट हुआ ज्योतिर्लिंग आज भी श्रद्धालुओं के हृदय में विश्वास की ज्योत जलाए रखता है।

अन्य दर्शनीय स्थल: प्रकृति के प्रांगण में प्रार्थना

- 130 वर्ग किमी में फैला भीमाशंकर वन्यजीव अभ्यारण्य वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की दुर्लभ प्रजातियों का घर है। यहाँ की हरियाली में खो जाने का अलग ही आनंद है।
- खेड से 50 किमी दूर यह ट्रेक साहसी पर्वतारोहियों को आकर्षित करता है। घने जंगल, चहकते पक्षी और रास्ते में खिले जंगली फूल, मन को छू लेते हैं।
- थोड़े दुर्गम रास्ते के बाद मिलती है एक शांत झील, जिसका नाम है हनुमान झील। पिकनिक मनाने और प्रकृति की गोद में कुछ पल बिताने के लिए यह आदर्श स्थान है।
- अहुपे झरने का गिरता जल और आसपास फैला हरा-भरा वातावरण युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करता है। निकट ही दिंबे बांध का मनोरम दृश्य भी दर्शनीय है।
- गुप्त भीमाशंकर के बारे में मान्यता है कि यहाँ मूल शिवलिंग प्रकट हुआ था। इस गुफा मंदिर की गहराई में एक रहस्यमयी शांति छाई रहती है।
- 2100 से 3800 फीट की ऊँचाई पर फैला सह्याद्री अभ्यारण्य क्षेत्र भौंकने वाले हिरण, सांभर, तेंदुओं और दुर्लभ गिलहरियों का निवास स्थान है। प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है।
- छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्मस्थान! शिवनेरी किला भी यहीं स्थित है। 300 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित यह किला सात मजबूत दरवाजों से सुरक्षित है। छत्रपति शिवाजी महाराज और माता जीजाबाई की मूर्ति यहाँ के गौरव का प्रतीक है।

यहाँ की यात्रा के लिए नवंबर से फरवरी का मौसम सबसे उपयुक्त है। हल्की सर्द हवा, साफ आसमान और प्रकृति की हरियाली यात्रा को अविस्मरणीय बना देती है। महाराष्ट्र के मसालेदार व्यंजनों का स्वाद यहाँ के भोजन में रच-बस गया है। वड़ा पाव, मिसल पाव, प्याज की भाजी के साथ गरमा-गरम भाकरी का स्वाद लें। यात्रा का अंत बंगाली मिठाई के मीठे स्वाद के साथ करना न भूलें!

भीमाशंकर सिर्फ़ एक ज्योतिर्लिंग ही नहीं, बल्कि प्रकृति की गोद में बसा एक जीवंत अनुभव है। यहाँ ट्रेकिंग का रोमांच, अभ्यारण्य की हरियाली, झरनों की मधुर ध्वनि और मंदिरों की पावन शांति - सब कुछ मिलकर एक अविस्मरणीय यात्रा का अनुभव कराते हैं। आप जब भी यहाँ आएंगे, इस भूखंड में बसी दिव्यता आपके मन को मोह लेगी।

नेहा मिश्रा
वरिष्ठ प्रबन्धक-आईटी
कानपुर अंचल

द्वारका और सोमनाथ : आस्था का अनुपम सफर

इस वर्ष द्वारिका जी की यात्रा पर परिवारजनों के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जनवरी के शीतल मौसम में पुरुषोत्तम ट्रेन द्वारा की गई यह यात्रा बहुत सुगम रही। द्वारका स्टेशन के पास में ही हमें होटल आसानी से उपलब्ध हो गया एवं द्वारिकाधीश जी का मंदिर होटल से लगभग 1.5 किमी. की दूरी पर था। होटल से निकलते ही सबसे पहले हमने मंदिर की ओर आटो से प्रस्थान किया। मंदिर परिसर के बाहर सड़क से ही भक्तों की भारी भीड़ की कतारें थीं। मंदिर प्रशासन द्वारा व्यवस्थाओं के बाद भी भीड़ को व्यवस्थित करने में प्रशासन को भारी मशक्कत करनी पड़ रही थी, किन्तु दर्शनार्थियों का उत्साह उतना ही अधिक था।

मंदिर प्रांगण के बाहर से ही मंदिर के शीर्ष पर लहराती ध्वजा मानो संदेश दे रही थी,जीवन श्रेष्ठ मूल्यों को लेकर आगे बढ़ते रहने का नाम है। मंदिर में प्रवेश द्वार पर मुख्य 4 स्तम्भ दिखाई देते हैं, यह मंदिर 5 मंज़िला है। मंदिर के विशाल स्तंभों पर उकेरी गई पच्चीकारी अद्भुत है। मान्यताओं से अनुसार मंदिर के वर्तमान स्वरूप का निर्माण 16वीं शताब्दी में कराया गया था जहां योगेश्वर श्री कृष्ण द्वारिकाधीश के रूप में विराजमान हैं। मथुरा पर जरासंध द्वारा बार बार किए गए आक्रमणों के बाद श्री कृष्ण ने अपनी प्रजा की रक्षा हेतु द्वारिका के रूप में एक नगरी बसाई एवं वहाँ पर माता रुक्मिणी के साथ द्वारिका का शासन चलाया।

रुक्मिणी मंदिर

मुख्य मंदिर से रुक्मिणी माता का मंदिर लगभग 3 किमी. पर स्थित है जहां किसी लोकल टैक्सी अथवा ऑटो द्वारा पहुंचा जा सकता है। मंदिर में रुक्मिणी माता के दर्शन बड़ी सुगमता से हुये। समुद्री किनारा होने के कारण शाम को ठंडी हवाएँ थकान को काफी कम कर रही थीं। अगले दिन सुबह हम गोमती घाट पर स्नान करने पहुंचे। यह घाट गोमती नदी के समुद्र से मिलने के स्थान पर स्थित है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

गोमती घाट से निकलने के बाद हरिसिद्धि माता, गोपी तालाब के दर्शन करते हुये हम नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए निकले जो कि द्वारिका से 16 किमी. की दूरी पर स्थित है। नागेश्वर मंदिर द्वार परिसर पर भगवान शिव की विशालतम मूर्ति स्थापित है जिसे देखकर सहज ही मन में वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। मुख्य मंदिर में भगवान शिव का चांदी द्वारा निर्मित ज्योतिर्लिंग समतल से कुछ नीचे स्थित है। परिसर में लगे एलईडी टीवी पर सहजता से मंदिर एवं आरती दर्शन का लाभ लिया जा सकता है। मंदिर प्रांगण में पूजा सामग्री, धार्मिक पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

पोरबंदर - कीर्ति मंदिर

अगले दिन सुबह हम पोरबंदर शहर के लिए टैक्सी द्वारा निकले जो कि द्वारिका से लगभग 104 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ पर महात्मा गांधी जी के जन्म स्थान से संबन्धित स्मारक जो अब "कीर्ति मंदिर" के नाम से जाना जाता है, देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ के विशाल प्रांगण के चारों तरफ गांधी जी के जीवन को दर्शाती हुयी फोटो प्रदर्शनी है। यहाँ पर गांधी जी से संबन्धित पुस्तक संग्रहालय भी है। पास ही स्थित सुदामा मंदिर भगवान श्री कृष्ण के मित्र सुदामा जी को समर्पित है। मंदिर के गर्भ गृह में सुदामा जी की पत्नी सुशीला, सुदामा जी एवं राधा कृष्ण जी की प्रतिमाएँ हैं।

सोमनाथ मंदिर

यात्रा के तीसरे दिन द्वारिका जी से 236 किमी. स्थित सोमनाथ जी के दर्शन हेतु हमने टैक्सी किराए पर ली। यह यात्रा लगभग 3 घंटे 45 मिनट में पूर्ण हुई। सोमनाथ मंदिर परिक्षेत्र लगभग 14,600 वर्गफीट

में फैला है जो कि समुद्र किनारे स्थित है। मंदिर प्रांगण के प्रारम्भ में कबूतरों का विशाल झुंड देखने को मिला। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपने भोजन की तलाश में प्रतिदिन इनका यहाँ आना सुनिश्चित है। मुख्य मंदिर प्रवेश द्वार में पहुँचने हेतु कई सिक्योरिटी चेक से गुजरना होता है। मंदिर परिसर में ही प्रसाद इत्यादि लेकर हमने सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए जो कि 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मंदिर के विशाल कक्ष में स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन बहुत ही व्यवस्थित एवं सहज तरीके से करने के उपरांत एक्ज़िट की ओर से हम मंदिर के प्रांगण पर निकले। जहां से मंदिर की विशालतम झलक एवं गगन चुम्बी शिखर पर विभिन्न ध्वजाएँ लहरा रही थीं। मंदिर परिसर की दीवारें और द्वार स्वर्ण एवं रजत जड़ित हैं। सोलहवीं बार महमूद गजनवी द्वारा मंदिर पर आक्रमण के दौरान मंदिर से लगभग काफी अधिक मात्रा में सोना लूटा गया था। कालांतर में सरदार वल्लभ भाई पटेल जी द्वारा मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया।

मन्दिर की बाहरी सीमा से लगी दीवार की तरफ जाने पर समुद्र देव के साक्षात दर्शन होते हैं। विशाल ऊंची लहरों के किनारे स्थित चट्टानों पर टकराने से उत्पन्न नाद मानो आकाश तक गुंजायमान हो रहा हो एवं समस्त ब्रह्मांड में केवल एक 'शिवत्व' की उपस्थिति का भान करा रहा हो। परिसर में Telescope (दूरबीन) के माध्यम से समुद्र पार देखने की व्यवस्था है। टेलिस्कोप से देखने पर समुद्र के दूसरे छोर पर बनी सड़क पर आती जाती गाड़ियाँ छोटी पणडुब्बियों सी प्रतीत होती हैं। परिसर में चारों ओर छाई हरियाली एवं मनमोहक पुष्पों के किनारो से होते हुये बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन झांकियों के माध्यम से होते हैं एवं प्रत्येक ज्योतिर्लिंग के बाहर स्थित शिलालेख पर संबन्धित ज्योतिर्लिंग के पौराणिक महत्व से संबन्धित जानकारी उपलब्ध है।

करीब एक दो घंटे मानो कुछ पल में व्यतीत हो गए एवं मंदिर के निकास द्वार की तरफ आते आते शाम के लगभग 5 बज गए थे। अब तक मंदिर की लटकी हुयी सतरंगी झालरों की लाइट जल चुकी थीं एवं मंदिर की आभा अप्रतिम प्रतीत होने लगी थी। मंदिर के समुद्री किनारे के तट पर बच्चे एवं बड़े सैर सपाटे कर रहे थे।

यहीं पर पास में सूर्य मंदिर एवं भाल्का तीर्थ मंदिर हैं जिनके दर्शन के उपरांत हम सोमनाथ से द्वारिका वापस आ गए।

भेट द्वारिका

द्वारिका से लगभग 34 किमी. दूर स्थित यह समुद्र के बीचो-बीच एक छोटा सा टापू है। यहाँ तक पहुँचने के लिए अब 2.3 किमी. लंबा Cable पुल बनाया गया है जो सुदर्शन सेतु के नाम से जाना जाता है, यह पुल ओखा से भेट द्वारिका को जोड़ता है। पूर्व में भेट द्वारका तक जाने के लिए समुद्र के माध्यम से नाव द्वारा पहुँचना होता था। इस पुल से होते हुये कुछ दूर पैदल यात्रा के उपरांत मंदिर के भीतरी भाग में प्रवेश करते हुये हमने भगवान शिव, कृष्ण, हनुमान जी, सुदामा जी के कई छोटे मंदिरों के दर्शन किए। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सुदामा जी प्रभु कृष्ण से भेट करने के किए इसी स्थान पर पहुंचे थे। यहाँ पर चावल के दान का विशेष महत्व है। इस सम्पूर्ण यात्रा के दौरान का अनुभव योगेश्वर कृष्ण के 'योग' एवं 'शिव' तत्व को समझने की प्रेरणा देता है।

तमन्नाओं की उड़ान

संसार तमन्नाओं का हर कोई बसाता है।
पक्का इरादा कड़ी मेहनत और हिम्मतवाला ही पार पाता है।
जो लक्ष्य पर फोकस कर बाधाओं से नहीं घबराता है।
बाधाओं को ही सीढ़ी बना मंजिल तक पहुंच जाता है।
जिस जिस ने भी बना संतुलन मंजिल की ओर क़दम बढ़ाया है।
मंजिल चली है उसकी तरफ़ मंजिल ने ही हाथ बढ़ाया है।
देखकर सपने बड़े जो आकार देने लग जाता है।
देखता नहीं जो पीछे मुड़कर सपने सच कर दिखलाता है।
दिल मजबूत कर जो नोरंग पंख कल्पना के लगाते हैं।
ख्वाब पूरे होते हैं उनके जिनके क़दम कभी नहीं डगमगाते हैं।

प्रवीन नैन
ग्राहक सेवा सहयोगी
दिल्ली रोड हिसार शाखा
चंडीगढ़ अंचल

चिंकी की छलांग

मोनिका चौधरी
अधिकारी
आरबीसी, जोधपुर
जोधपुर अंचल

कभी-कभी ज़िंदगी एक जंगल बन जाती है, काँटों से भरा, भ्रमों से घिरा, जहाँ हर मोड़ पर डर खड़ा मिलता है और हर झील में हमारे बीते घावों का प्रतिबिंब झलकता है। "चिंकी की छलांग" एक ऐसी कथा है, जो किसी गिलहरी की नहीं बल्कि उस आत्मा की है जो तमाम कठिनाइयों के बावजूद सच्चाई की राह पर चलती है। यह कहानी उन अनगिनत लड़कियों की आवाज है जो अपनों की बेरुखी, समाज की परछाइयों और अपनी असुरक्षाओं के बीच पली-बढ़ी, लेकिन फिर भी अपनी पहचान को पाने के लिए छलांग लगाती हैं। यह केवल एक यात्रा नहीं, एक पुनर्जन्म होता है।

जंगल के एक सुनसान कोने में, काँटों की झाड़ियों के पीछे एक पुराना आम का पेड़ था। वहीं एक नन्ही सी गिलहरी चिंकी अपने परिवार के साथ रहती थी। माँ-बाप दोनों एक हादसे में मारे जा चुके थे। चिंकी को उसकी मौसी ने पाला, लेकिन वह भी उसे "मनहूस" कहती, क्योंकि चिंकी के आने के बाद घर में विपत्तियाँ छा गई थीं।

चिंकी बचपन से ही अलग थी; चुपचाप रहने वाली, गहरी सोच में डूबी हुई, लेकिन उसकी आँखों में एक सपना पलता था- वह जंगल के उस छोर पर काले पहाड़ के पार जाना चाहती थी। सभी कहते, वहाँ अंधकार है, शिकारी हैं, मौत है। लेकिन चिंकी को विश्वास था कि वहीं कहीं उस ओर उसकी आज़ादी छुपी है।

एक दिन, जंगल में भयंकर आग लग गई। जानवर डरकर इधर-उधर भागने लगे। चिंकी ने देखा, उसकी मौसी खुद को बचाने में लगी थी, पर किसी को उसकी फिक्र नहीं थी। सबने अपने प्राण बचाए, लेकिन चिंकी बुरी तरह झुलस गई।

कई दिन तक वह अकेली एक बिल में छिपी रही, दर्द से तड़पती हुई। तभी उसकी मुलाकात एक अंधे उल्लू बाबा से हुई; एक ऐसा ज्ञानी जो उड़ नहीं सकता था, लेकिन जीवन को गहराई से देखता था। उसने चिंकी को एक रहस्य बताया कि उस काले पहाड़ के पार एक 'काँच की घाटी' है, जहाँ कोई डर नहीं, कोई बंदिश नहीं। लेकिन वहाँ पहुँचना आसान नहीं है। हर मोड़ पर परीक्षा होगी और जो झूठ बोलेगा, वह पहाड़ से गिर जाएगा।

चिंकी ने तय कर लिया कि वह उस घाटी तक ज़रूर पहुँचेगी।

यात्रा का प्रत्येक पड़ाव एक प्रतीक था। जब पहला मोड़ आया, जहाँ उसकी मुलाकात एक शेरनी से हुई। शेरनी ने कहा, "अगर मेरी पूँछ के नीचे से निकल जाओ, तो मैं रास्ता दे दूँगी।" चिंकी डर गई कि क्या यह कोई चाल है? या कोई मज़ाक है? लेकिन उसने विनती की, "अगर मेरा मन सच्चा है, तो मुझे जाने दो।" शेरनी ने उसे पार जाने दिया।

अगला पड़ाव था नीम का जंगल- जहाँ हर दृश्य धोखे से भरा था। वहाँ उसे एक और गिलहरी मिली, हूबहू चिंकी जैसी, वही आवाज़, वही चाल-ढाल। वह बोली "तू थक गई है चिंकी," आ जा, "मेरे साथ चल, आराम कर। तेरे सपनों का कोई मतलब नहीं।" लेकिन यह उसके भीतर छुपा डर था जो उसका ही रूप धरकर उसे भटकाना चाहता था।

अगले पड़ाव पर चिंकी ने खुद को एक झील के सामने खड़ा पाया। झील के बीच एक पत्थर था, जहाँ 'सच' लिखा था। उसने आँखें बंद कीं और छलांग लगाई।

छलांग की यह यात्रा आत्मा के भीतर उतरने की थी आँखें खुलीं, वह झील में नहीं थी, बल्कि एक काँच की सुरंग में थी, जहां हर दीवार पर उसकी पुरानी यादें चल रही थीं:

वह दिन जब माँ ने थप्पड़ मारा था

वह क्षण जब सबने कहा ''तू किसी लायक नहीं है''

वह पल जब उसने खुद से कहा ''शायद मैं सच में गलत हूँ''

हर दृश्य एक ज़ख्म की तरह चुभ रहा था। वह गिर गई, रोई, चीखी।

और तभी एक आवाज़ आई- बाबा की आवाज़! "अगर तू यहाँ तक आई है, तो तू कमजोर नहीं है। ये तेरी अग्नि परीक्षा है।"

चिंकी ने अपने सारे डर, सारे दुखों को एक चीख में बदल दिया और सुरंग के पार पहुँची।

घाटी कोई स्वर्ग नहीं थी, वह वैसी नहीं थी जैसी उसने कल्पना की थी, न सोने के महल थे, न संगीत था। बस एक आईना रखा था।

चिंकी ने उस आईने में देखा, एक नई गिलहरी थी, आत्मविश्वासी, घावों के निशान लिए हुए, लेकिन मुस्कराती हुई।

वह घाटी कोई रहस्यमयी भूमि नहीं थी, वह उसे आत्मबोध कराने वाली यात्रा थी। यात्रा के इस अंतिम पड़ाव पर उसकी आत्मा अब स्वतंत्र थी।

“यात्रा के पन्ने” - राहुल सांकृत्यायन

सचिन यादव
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित पुस्तक “यात्रा के पन्ने” हिंदी साहित्य की माला में एक नायाब मोती है। इसे वर्ष 1952 में प्रकाशित किया गया था। 450 पृष्ठों का यह संग्रह राहुल सांकृत्यायन की विविध यात्राओं एवं अनुभवों का संकलन है, जिसमें यात्रा मार्ग, भोगौलिक परिवर्तनों, लोक-जीवन, सांस्कृतिक विविधताओं, ऐतिहासिक प्रसंगों और व्यक्तिगत अनुभवों की झलक मिलती है।

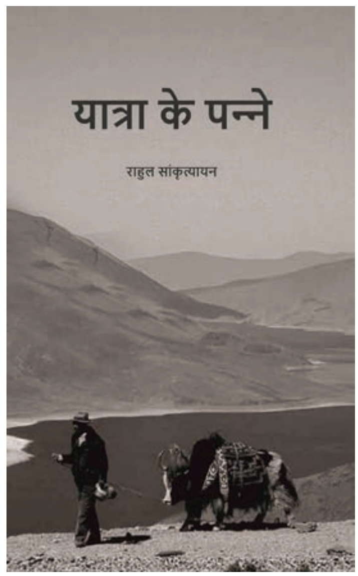

पुस्तक में राहुल सांकृत्यायन की यात्राएँ केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि वे समय और विचार की यात्रा भी बन गई हैं। ‘यात्रा के पन्ने’ में उनका उद्देश्य सिर्फ नई जगह देखना नहीं, अपितु जीवन और समाज को समझना भी रहा। उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांतों में जिस सहजता से भाषा, रीति-रिवाज, वेशभूषा, पर्व-परंपराओं का विवरण दिया है, उसे पढ़कर पाठक उस स्थानीय संस्कृति का अभिन्न अंग बनकर उसे अनुभव करता है। वे कहते हैं, “मैंने ज्ञान को सफर में नाव की तरह लिया है, बोझ की तरह नहीं।” अपनी यात्राओं में भाषा एवं साहित्य के महत्त्व को वह बड़ी गहराई के साथ देखते थे। उनका कथन है:

“भाषा और साहित्य, धारा के रूप में चलता है; फर्क इतना ही है कि नदी को हम देश की पृष्ठभूमि में देखते हैं जबकि भाषा देश और भूमि दोनों की पृष्ठभूमि को लेकर आगे बढ़ती है।”

सांकृत्यायन घुमक्कड़ी को केवल भ्रमण नहीं, बल्कि आत्मिक और बौद्धिक स्वतंत्रता का साधन मानते हैं। उनका मानना था, “घुमक्कड़ी मानव-मन की मुक्ति का साधन है।” यही विचार उनकी लगभग सभी यात्राओं में झलकता है। यात्राओं के दौरान उन्होंने आध्यात्मिक और बौद्धिक बदलावों को जीया और अपने जीवन में विचार और विश्वास के कई पड़ाव देखे जैसे कि वैष्णव, आर्य समाज, बौद्ध और अंततः मार्क्सवाद। यह वैचारिक यात्रा भी पुस्तक के पृष्ठों में विद्यमान है।

राहुल सांकृत्यायन ने अपने यात्रा-साहित्य को देश-विदेश की सांस्कृतिक संपन्नता से समृद्ध किया। उन्होंने जगह-जगह के लोगों के रहन-सहन, आचार-विचार, जीवन-पद्धति आदि का सजीव चित्रण किया, जिससे ‘यात्रा के पन्ने’ विविध सांस्कृतिक दृष्टि विकसित करता है। यात्रा-साहित्य में ‘यात्रा के पन्ने’ के समान गहराई, निष्पक्षता, सामाजिक और ऐतिहासिक चेतना शायद ही किसी अन्य कृति में मिलती है। राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक के माध्यम से यात्रा और जीवन, संस्कृति और समाज, भाषा और ज्ञान के बीच गहरा संबंध स्थापित किया है।

‘यात्रा के पन्ने’ सिर्फ यात्रा-वृत्तांतों का संकलन मात्र नहीं, बल्कि विचारशील और सांस्कृतिक खोज का दस्तावेज है। यह पुस्तक पाठकों को सिर्फ यायावरी के लिए नहीं, बल्कि जीवन को विस्तार से समझने की प्रेरणा देती है। उनकी घुमक्कड़ी का दर्शन आज भी युवाओं और साहित्य प्रेमियों के लिए प्रासंगिक और प्रेरक है।

संगीत

लवली वेदी
फिल्मनगर शाखा
तेलंगाना अंचल

सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती है। गायन, वादन व नृत्य तीनों के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत नाम इन तीनों के एक साथ व्यवहार से पड़ा है। गाना, बजाना और नाचना प्राय: इतने पुराने हैं जितना पुराना आदमी है। बजाने और बाजे की कला आदमी ने कुछ बाद में खोजी-सीखी हो, पर गाने और नाचने का आरंभ तो न केवल हज़ारों बल्कि लाखों वर्ष पहले उसने कर लिया होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

गायन मानव के लिए प्राय: उतना ही स्वाभाविक है जितना भाषण। कब से मनुष्य ने गाना प्रारंभ किया, यह बतलाना उतना ही कठिन है जितना कि कब से उसने बोलना प्रारंभ किया है। परंतु बहुत समय बीत जाने के बाद उसके गायन ने व्यवस्थित रूप धारण किया होगा।

संगीत सुनने के लाभ

संगीत हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है और यह हमारी दैनिक जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। संगीत केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं सुना जाता है, वरन इसके कई सारे फायदे हैं। अब संगीत का प्रयोग वैज्ञानिक अनेक रोगों के उपचार के लिए भी कर रहे हैं। अनेक वैज्ञानिक रिसर्च ने इस बात को प्रमाणित किया है कि संगीत सुनने से निम्नलिखित अनेक लाभ होते हैं।

- **तनाव कम होता है**

आज कल हर इंसान की जिंदगी दौड़ धूप से भरी रहती है। काम करते करते हम बुरी तरह से थक जाते हैं। जब संगीत सुनते हैं तो हमारा दिमाग रिलेक्स मोड के अंदर आता है। हमारे दिमाग मे नई एनर्जी का संचार होता है। हम अच्छा फील करते हैं। संगीत हमारे मूड को बदल देता है। संगीत दिमाग मे कार्टिसोल के स्तर को कम करता है जिससे दिमाग बेहतर तरीके से काम करता है।

- **दिमाग की नसों को आराम मिलता है**

काम की वजह से दिमाग की नसें ज्यादा थक जाती हैं। संगीत सुनने से दिमाग को आराम मिलता है जहां पर कई बार दवाएं काम नहीं करती हैं । वहां म्यूजिक थैरेपी काम करती है। स्वर- तरंगें संगीत का रूप लेकर जीवन दायनी सामर्थ्य उत्पन्न करती हैं ।

- **दर्द कम करने में लाभप्रद**

कुछ वैज्ञानिक शोध यह बताते हैं कि जब इंसान किसी तरह के दर्द से पीड़ित होता है तो उसे उसका मन पसंद संगीत सुनाया जाना चाहिए जिससे उसका ध्यान दर्द से हट जाता है और उसे दर्द का एहसास कम होता है।संगीत सुनने से दिमाग में डोपामाइन का स्तर अधिक होता है जो खुशी पैदा करता है।

- **स्वास संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए**

अमेरिका वैज्ञानिकों के अनुसार संगीत थेरैपी फेफड़ों के लिए काफी अच्छी रहती है। सांस से संबंधित रोगी को संगीत थैरेपी से ईलाज करने से फायदा मिलता है लेकिन गम्भीर सांस के रोग इससे सही नहीं हो पाते हैं।

- **स्मृति ह्रास (मेमोरी लॉस) को कम करता है**

जिन लोगों की यादाश्त अच्छी नहीं होती है। उनको संगीत सुनना चाहिए जिससे उनकी यादाश्त अच्छी हो जाती है और दिमाग काफी बेहतर तरीके से काम करने लग जाता है।

- **ह्रदय के लिए भी संगीत अच्छा है**

संगीत सुनने से दिमाग के अंदर एंडोर्फिंस हार्मोन का स्राव होता है । वैज्ञानिकों के अनुसार रोजाना 30 मिनट संगीत सुनने से दिल की क्षमता के अंदर बढ़ोतरी होती है। एक्सरसाइज के साथ संगीत सुनने से दिल की कार्यक्षमता के अंदर इजाफा होता है।

अच्छे संगीत सुनने से दिमाग के अंदर चल रहे बेकार के विचारों को विराम मिलता है और रात के समय दिमाग पूरा खाली हो जाने से अच्छी नींद आती है। आमतौर पर जिन लोगों को नींद नहीं आती उनको सोने से पहले कुछ देर अच्छे गाने सुनने चाहिए।

- (विभिन्न स्रोतों से संकलित)

यात्रा वृत्तांत

रामेश्वरम : जहाँ विश्वास जीवित है

रश्मि रानी
रामकृष्णा नगर शाखा
पटना अंचल

कभी-कभी जीवन की भागदौड़ से दूर जाकर एक ऐसी जगह की खोज होती है, जहाँ शांति और आस्था दोनों मिलते हैं। दिसंबर के उस सर्द महीने में मैंने और मेरे परिवार ने रामेश्वरम की यात्रा का निर्णय लिया। मेरी पोस्टिंग गांधीनगर में थी, इसलिए हवाई यात्रा के लिए हमें अहमदाबाद एयरपोर्ट जाना पड़ा। हमने अहमदाबाद से चेन्नई के लिए फ्लाइट ली और वहाँ से मंडपम एक्सप्रेस ट्रेन से रामेश्वरम के लिए निकल पड़े। उस दिन संयोगवश, बारिश भी हो रही थी, और ट्रेन की खिड़की से बाहर का दृश्य इतना खूबसूरत था कि मन बस उसी दृश्य में खो गया था।

रामनाथस्वामी मंदिर - जहाँ स्वयं शिव प्रतीक्षारत हैं

रामेश्वरम का प्रमुख आकर्षण रामनाथस्वामी मंदिर है, जो 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मंदिर का विशाल और प्राचीन स्थापत्य आपको जैसे समय की यात्रा पर ले जाता है। मंदिर के भीतर स्थित 22 तीर्थकुंडों में स्नान करने का अनुभव एक अद्भुत आंतरिक शांति प्रदान करता है। हर कुंड का जल अपना अलग स्वाद और तापमान लिए हुआ था। यह न केवल शरीर की शुद्धि करता है, बल्कि मन की भी। वहाँ की ताजगी और ठंडक ने मुझे गहरे आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित किया।

समुद्र की शांत रेखा - जहाँ राम ने समुद्र को बाँधा

मंदिर के पास ही समुद्र तट है, जहाँ खड़े होकर ऐसा लगता है जैसे समय थम गया हो। यह वही स्थान है, जहाँ भगवान राम ने समुद्र को बाँधने का संकल्प लिया था। इस स्थल पर खड़े होकर समंदर की शांत लहरों को देखना सचमुच एक अद्भुत अनुभव था। उस दिन बारिश और समुद्र की नमी ने वातावरण को और भी श्रद्धापूर्वक बना दिया। यह क्षण मेरी आत्मा में कहीं गहरे समा गया।

धनुषकोडी - इतिहास की मिट्टी में दबा विश्वास

इसके बाद हम धनुषकोडी गए, जो कभी एक विकसित नगर था, अब एक उजड़ा हुआ स्थान बन चुका है। यहाँ की वीरानी में भी एक गहरी कथा समाई हुई है, वह कथा जिसमें भगवान राम ने सीता माता की सहायता के लिए समुद्र पर पुल बनाया था। जब हम धरती के छोर पर पहुँचे, तो सामने दूर क्षितिज पर श्रीलंका की एक हल्की सी रेखा नज़र आई। यहाँ खड़े होकर सचमुच ऐसा लगा, जैसे राम का विश्वास आज भी वहाँ बसा हो। समुद्र, रेत और आकाश का यह मिलन-बिंदु मेरे मन को छू गया।

हाउस ऑफ कलाम - साधारण दीवारों में बसी असाधारण प्रेरणा

रामेश्वरम में एक और स्थान है, जो किसी से भी प्रेरणा लेने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है - डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का घर, जिसे "हाउस ऑफ कलाम" कहा जाता है। यह एक साधारण सा घर है, लेकिन उसके भीतर बसी आत्मा उसे असाधारण बना देती है। घर के भीतर डॉ. कलाम की दुर्लभ तस्वीरें, उनके जीवन के प्रमुख क्षणों को दर्शाती तस्वीरें, उनके द्वारा किए गए योगदान के छोटे-छोटे मॉडल्स और उनके पुरस्कार सहेजे गए हैं। दीवारों पर उनके प्रेरणादायक वाक्य, जैसे "सपने वो नहीं जो हम सोते वक्त देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते," हमें अपने लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हैं। यह घर सिर्फ एक स्मारक नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। वहाँ रखी उनकी किताबें, डायरी, चश्मा और पेन जैसे साधारण लेकिन महत्वपूर्ण वस्त्र मुझे यह समझने में मदद करते हैं कि किसी महान कार्य के लिए साधारणता से जुड़ा रहना ज़रूरी है।

अंतत: मौन ही असली अनुभूति है

लेकिन सबसे अधिक प्रभावशाली बात वापसी के रास्ते में, ट्रेन में बैठे-बैठे बारिश थम चुकी थी, लेकिन मन में कुछ विशेष था, शांति, संतुलन और आत्मविश्वास का वह अहसास। रामेश्वरम ने हमें ना सिर्फ आस्था का, बल्कि आत्मा का दर्शन कराया। रामेश्वरम ने हमें सिर्फ भगवान राम और शिव के दर्शन नहीं कराए, बल्कि आस्था और साधना के भीतर छिपे उस सत्य से मिलवाया, जो हर जगह और हर व्यक्ति में बसता है। यह यात्रा अब भी मेरे भीतर जारी है, हर श्वास में, हर मौन में।

चित्र काव्य प्रतियोगिता - 4 के विजेता

“चकाचौंध में खोया बचपन”

चित विचलित है देख इस बालक के काज,
जाने कौन-सा दुख इसको, या है कोई बात !
यूं ही नहीं उठाता कोई इस उम्र में झोला,
दिखता है मासूम बड़ा और कितना भोला!
चमक देखता है बाहर की या खोजता खुद को,
बेचता है गुब्बारे जैसे ये मुझको!

आलोक गुप्ता
प्रबन्धक
निगमित एवं संस्थागत ऋण विभाग
हरदोई अंचल

“सपनों के गुब्बारे”

हाथों में थामे रंग-बिरंगे तारे,
बेच रहा सपने-रोज़ के सहारे।
तस्वीरों की छत, भीड़ की दीवार,
हँसी की ओट में छुपा संसार।

बचपन यहाँ बैठा बाज़ार में,
सपनों की कीमत है, रोटी-प्यार में।
यह बच्चा नहीं, है उम्मीदों का दीप,
गुब्बारों में बाँधें कई अनसुने गीत।

भव्य चौहान
ब्यावर शाखा
जोधपुर अंचल

“व्यस्क बचपन”

आज न माँ की गोद, न पापा के कंधे,
पहने कपड़े, कटे-फटे, मैले और गंदे।
ज़िम्मेदारी का बोझ उठाए कोमल कंधे
न देख पाये जिसे जमाने के निष्ठुर अंधे

निराश, हताश हुए ये कतार नयन,
व्यथित हृदय करें मन में ही क्रंदन
खुशियाँ झलकाते ये निर्जीव गुब्बारे
निष्ठुर मानवता के हैं अक्स सारे।

अरूप चक्रबर्ती
लिपिक
बैरकपुर शाखा
बारासात अंचल

“निश्छल बालपन”

कुछ पुराने फिल्मी चित्रों से सजी दीवार,
ग्राहक को खींचे, हँसते गुब्बारों की पुकार
ये आंखें ढूंढ रही, कोई सच्चा खरीददार,
देखकर निकल जाते हैं इस पथ पर हजार
चुप है वो, पर चेहरे पर भाव है अपार,
आशा-निराशा से परे, भरोसा उसका हथियार।

हार्दिककुमार किशोरकुमार पंचाल
शाखा प्रबंधक
केरा
गांधीनगर अंचल

चित्र काव्य प्रतियोगिता - 5

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली कविता, अधिकतम 50 शब्दों में लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ 04 कविताओं के रचयिताओं का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

वक़्त

ये वक़्त वक़्त की बात है
कभी कभी मैं ये सोचता हूँ
कि आने वाला वक़्त मेरा होगा
जिसमें मेरे ख्वाबों का जहान हकीकत बनेगा

ये वक़्त वक़्त की बात है
पहले स्कूल जाने से डरते थे
आज पूरी दुनिया अकेले घूम लेते हैं
पहले अंधेरे से डर लगता था

आज अंधेरों में सुकून ढूंढ लेते हैं हम

ये वक़्त वक़्त की बात है
जीवन में सजे हैं कुछ सपने, जिसे हर हाल में पूरे करने हैं ।
हर रास्ता वक़्त माँगता है, हर सपना संघर्ष माँगता है।

माना कि मंजिल दूर है, चुनौतियाँ भरपूर है
तूने जो कहा है तू करके दिखाएगा एक दिन
धैर्य रख थोड़ा और ज़ोर लगाता रह

वक़्त लगता है सूरज जैसा चमकने में
ये वक़्त वक़्त की बात है

खुश था तू उस दिन जब सब साथ थे मेरे
नाराज हैं जब कोई नहीं हैं साथ मेरे
थम जा, ठहर जा, ए पल, कहाँ चल दिये
टूटे हुये मन को सँवरने में वक़्त लगता है
ये वक़्त वक़्त की बात है
एक दिन यूं ही इंतजार करते करते
कब इतने बड़े हो गए एहसास न हुआ
और मेरी ये छोटी सी दुनिया में तू
कभी खुशी लाता है तो कभी गम
कभी मीठे सपने, तो कभी नम
ये वक़्त वक़्त की बात है

संतोष कुमार
प्रबंधक
आरबीसी गया
गया अंचल

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है,
यहाँ जो दिखता है वो सच होता नहीं है,
भागते हैं लोग अपने सपनों के पीछे,
पर सपने टूटने पर कोई रोता नहीं है।

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है....

न घर में आँगन, न भादों न सावन,
न आँगन में तुलसी, न सावन में झूला,
न त्योहारों की रौनक, न मिट्टी की खुशबू,
इन यादों को दिल मे कोई सँजोता नहीं है,

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है ....

न बाबा न दादी, न नाना न नानी,
न मान मुनव्वल, न किस्से कहानी,
न दोस्त हैं ज़्यादा, न दुश्मन हैं कम,
यहाँ किसका विश्वास खोता नहीं है?

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है....

लंबी छतों पर अलग चारपाई,
पाँच बाइ पाँच में यहाँ बिछती चटाई,
न रातों को नींद, न दिन में सुकून,
क्या ये जीवन से समझौता नहीं है?

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है....

न मंदिर की घंटी, न मस्जिद की अज़ान,
ईमानदार है वो, जो है कम बेईमान,
पाप की गठरी ऐसी बंधी है,
जिसे कोई संगम भी धोता नहीं है।

बड़ा शहर कभी सोता नहीं है ....

प्रिया अवस्थी
वरिष्ठ प्रबन्धक
आंचलिक कार्यालय,
लखनऊ अंचल

पथिक कर्म

जो बीत गयी थी रातों में
उन बातों को न याद करो।
है पथ तेरा अब यही पथिक
चलके इस पर ही काज करो।।

मंजिल के मोती के सीप यहाँ
हैं हिम्मत के गहरे सागर में।
तू मेहनत का गोता तो लगा
फिर गंगा भी आए गागर में।।

है कौन यहाँ जो वर्जित हो
ईश्वर की कृपा पावन से।
है दिन-रात और मौसम एक
पर कर्मों से भेंट हो सावन से?

है हार नहीं ये हार तेरी
है जीत का बस ये शंखनाद।
तू लगा तो अनुभव कर्मों में
फिर देख उजाला होगा आज।।

ये जीवन तेरा बस तेरा नहीं
तू आशा है बहुतेरों का।
है तू ही ख़्वाब और तू ही सच
तू ही सूरज है नए सवेरों का।।

तेरी ताकत तेरी हिम्मत है
तेरी चाहत से तू आज़ाद।
है हौसलें लहरें तेरी
जिनके पार होगा तू आबाद।।

राहुल लाल
काटजुड़ीडाँगा शाखा
बर्धमान अंचल

नराकास पुरस्कार

उन्नाव मुख्य शाखा - प्रथम पुरस्कार

रायगड आंचलिक कार्यालय - प्रथम पुरस्कार

शाहपुर, बेलगांव शाखा - प्रथम पुरस्कार

गुवाहाटी आंचलिक कार्यालय - प्रथम पुरस्कार

अहमदाबाद आंचलिक कार्यालय - द्वितीय पुरस्कार

तेलंगाना आंचलिक कार्यालय - तृतीय पुरस्कार

कानपुर आंचलिक कार्यालय - तृतीय पुरस्कार

तिरुवनंतपुरम आंचलिक कार्यालय - तृतीय पुरस्कार

विशाखापट्टणम आंचलिक कार्यालय - प्रोत्साहन पुरस्कार

जोधपुर आंचलिक कार्यालय - सहभागिता प्रमाणपत्र

बैंक ऑफ इंडिया के तत्वावधान में नराकास की छमाही बैठकें

नराकास नागपुर की छमाही बैठक

नराकास रत्नागिरी की छमाही बैठक

नराकास उन्नाव की छमाही बैठक

नराकास गुरुग्राम की छमाही बैठक

नराकास सिवान की छमाही बैठक

नराकास खंडवा की छमाही बैठक

नराकास हरदोई की छमाही बैठक

नराकास बड़वानी की छमाही बैठक

नराकास केन्दुझर की छमाही बैठक

नराकास हजारीबाग की छमाही बैठक

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

दिनांक 28.05.2025 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा बेंगलुरू आंचलिक कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

दिनांक 17.06.2025 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा देहरादून आंचलिक कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

दिनांक 16.07.2025 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आगरा आंचलिक कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

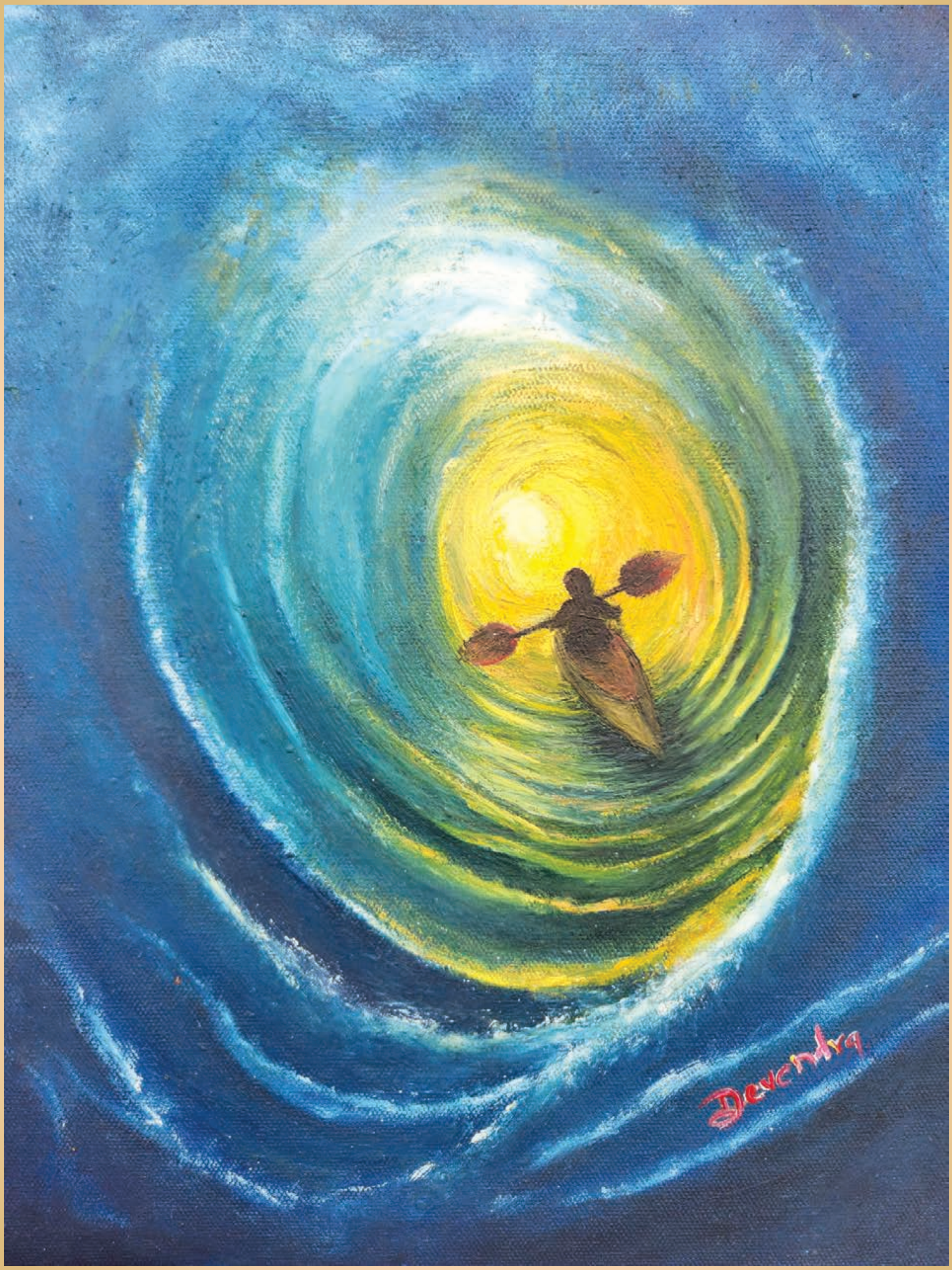

देवेंद्र भारद्वाज
सी एंड आईसी विभाग
हरदोई आंचलिक कार्यालय